पूर्वी अफ्रीका की लोक कथाऐं

जिबूती, ऐरिट्रीया, केन्या, मैडागास्कर, रीयूनियन, सोमालिया, सूडान, यूगान्डा

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Poorvee Africa Ki Lok Kathayen (Folktales of East Africa)
Cover Page picture: Blue Nile Falls, Ethiopia
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Eastern Africa

12 countries of East Africa
(1) Djibouti, (2) Eritrea, (3) **Ethiopia**, (4) Kenya, (5) Madagaskar (6) Mozambique
(7) Rwanda Burundi, (8) Somalia, (9) Sudan, (10) Swaziland, **(11) Tanzania**, (12) Uganda
Ethiopia and Tanzania's folktales are given separately.

विंडसर, कैनेडा

मार्च **2018**

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
पूर्वीय अफ्रीका की लोक कथाऐं 5
1 शेर, ख़रगोश और हयीना 7
2 सौ जानवर 14
3 नदी की आत्मा 28
4 तीन उम्मीदवार 41
5 हयीना जिसने एक लड़की से शादी की 47
6 गधे के कान वाला राजा 55
7 कृतज्ञ सॉप 59
8 जादुई चिड़े का मीठा गाना 68
9 फ़सीटो बाजार गया 74

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

पूर्वी अफ्रीका की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। इस तरह अफ्रीका साइज़ और जनसंख्या दोनों में एशिया से दूसरे नम्बर पर आता है। अफ्रीका की जनसंख्या 1 बिलियन से ज़्यादा है और उनमें से भी इसमें 50 प्रतिशत जनता 20 साल की उम्र से कम की है। इस तरह से यह दुनियॉ का सबसे ज़्यादा जवानों का महाद्वीप है।

इस महाद्वीप में संसार के सातों महाद्वीपों में सबसे ज्यादा देश हैं – 54 देश। मिश्र, इथियोपिया, यूगान्डा, तनज़निया, केन्या, दक्षिण अफ्रीका, ज़िम्बाब्वे और नाइजीरिया यहॉ के जाने माने देशों में आते है। इस महाद्वीप में संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान भी है – सहारा रेगिस्तान। इसने अफ्रीका का 25 प्रतिशत हिस्सा घेरा हुआ है। इसकी मुख्य नदियॉ हैं नील नदी, ज़ाम्बेज़ी नदी, कौंगो नदी। इसकी मुख्य झील है विक्टोरिया झील जो तीन देशों में बॅटी है – केन्या. यूगान्डा और तनज़ानिया। नील नदी इस विक्टोरिया झील से यूगान्डा के उत्तर की तरफ से निकलती है और उत्तर की तरफ ही चली जाती है। इसका मुख्य पहाड़ है किलिमन्जारो जो तनज़ानिया में है। इसमें तीन ज्वालामुखी चोटियॉ हैं।

इसके इथियोपिया देश को "तेरह महीने की धूप का देश" पुकारा जाता है। इसके लिसोठो देश को "आकाश में राज्य" नाम से पुकारा जाता है।[1] इसके मिश्र देश के पिरामिडों को कौन नहीं जानता। वे संसार के आठ आश्चर्यों में से एक हैं।

बहुत बड़ा होने की वजह से इसमें पूर्व से ले कर पश्चिम तक और उत्तर से ले कर दक्षिण तक बहुत भिन्नता है – खाने में, पीने में, पहनने में, रहने सहने में, लोगों की शक्लों में, भाषा में। पर एक बात सबमें एक सी है कि यहॉ के बहुत सारे देश फुटबाल खेलते हैं। यहॉ की जनसॅख्या में ईसाई और मुसलमान करीब आधे आधे हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में बहुत कम मिलता है इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की लोक कथाऐं हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है। इस महाद्वीप से हमने 400 से भी अधिक लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं। अफ्रीका के 54 देशों में से केवल कुछ ही देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – नाइजीरिया, घाना, मिश्र, ज़ंजीबार, पश्चिमी अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका, इथियोपिया आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाए इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं। दूसरे, अफ्रीका में नाइजीरिया और घाना देशों की लोक कथाओं में अनन्सी मकड़े, खरगोश और कछुए का अपना एक अलग ही स्थान है इसलिये इन तीनों की लोक कथाऐं भी अलग से ही दी गयीं है।

पूर्वी अफ्रीका अफ्रीका महाद्वीप के पूर्व में स्थित हिस्से का नाम है। इसके पूर्व में लाल सागर है और पश्चिम में मध्य अफ्रीका के देश हैं। बहुत पुराने समय से लाल सागर यातायात का एक बहुत बहुत बड़ा साधन रहा है। और अब स्वेज नहर बन जाने से तो इसका महत्व इसमें यातायात बढ़ जाने से बहुत ही अधिक बढ़ गया है क्योंकि भारत चीन आदि देशों से यूरोप को जाने वाले और यूरोप से पूर्व के देशों की तरफ आने वाले अब सब जहाज़ बजाय दक्षिण अफ्रीका का चक्कर काटने के स्वेज़ नहर से निकल कर चले जाते हैं। इससे इथियोपिया और जिबूती के बन्दरगाहों का इस्तेमाल अब बहुत बढ़ गया है।

---

[1] "Land of Thirteen Months of Sunshine" and "Kingdom in the Sky"

पूर्वीय अफ्रीका में **12** देश आते हैं – ऐरिट्रीया, इथियोपिया, जिबूती, सोमालिया, सूडान, केन्या, मैडागास्कर, रुआन्डा बुरून्डी, मोज़ाम्बीक, तनज़ानिया और यूगान्डा। नेलसन मन्डेला ने एक पुस्तक सम्पादित[2] की है जिसमें उन्होंने अफ्रीका के कई देशों से ली गयी **32** कथाऐं प्रकाशित की हैं। हम कुछ उन कथाओं में से और कुछ दूसरी जगहों से पूर्वीय अफ्रीका के देशों की कथाऐं चुन कर अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये इस "पूर्वीय अफ्रीका की लोक कथाऐं" नाम की पुस्तक में प्रस्तुत कर रहे हैं।

क्योंकि इथियोपिया की लोक कथाऐं बहुत हैं उसकी कथाऐं हमने एक अलग पुस्तक में प्रकाशित की हैं "इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**" और "इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**"।[3] इसके अलावा तनज़ानिया के एक द्वीप ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं भी बहुत हैं इसलिये उसकी कथाऐं भी हमने एक अलग पुस्तक में प्रकाशित की हैं – "ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं"[4]। शेष देशों की लोक कथाऐं इस पुस्तक में दी जा रही हैं।

आशा है दूसरे लोक कथाओं के सम्ग्रहों की तरह लोक कथाओं का यह संग्रह भी तुम सब लोगों को बहुत पसन्द आयेगा।

---

[2] Mandela, Nelson (ed). "Favorite African Stories". 32 stories.

[3] Both the books, "Ethiopia Ki Lok Kathayen-1" and "Ethiopia Ki Lok Kathayen-2" by Sushma Gupta have been published by Prabhat Publications, India, New Delhi. 2017.

[4] "Zanzibar Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta written in Hindi language

1 शेर, खरगोश और हयीना[5]

पूर्वीय अफ्रीका की यह लोक कथा केन्या देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि सिम्बा[6] शेर अपनी गुफा में अकेला रहता था।

जब वह जवान था तब तो उसे वहाँ अकेला रहना कुछ ज़्यादा बुरा नहीं लगता था पर इस कहानी से पहले उसकी टाँग में इतनी ज़ोर से चोट लग गयी कि वह अपने लिये खाना ही नहीं ला सका। तब उसको लगा कि एक ज़िन्दगी में एक साथी का होना कितना जरूरी होता है।

उसकी हालत तो बहुत ही खराब हो जाती अगर सूंगूरू बड़ा खरगोश[7] एक दिन उसकी गुफा में उससे मिलने नहीं आता तो।

जब सूंगूरू बड़े खरगोश ने सिम्बा शेर की गुफा में झाँका तो उसको लगा कि शेर बहुत भूखा है। वह तुरन्त ही अपने बीमार

---

[5] The Lion, the Hare and the Hyena – a Hare and Hyena folktale from Kenya, East Africa.
Adapted from the book: "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Retold by Phyllis Savory

[6] Simba is the name of the lion in Eastern and Southern African countries.

[7] Soongooroo hare – hare is the rabbit-like aimal but it is bigger than him in size. See its picture above. Soongooroo is his name Eastern and Southern African countries.

दोस्त की देखभाल और उसके आराम का इन्तजाम करने के लिये दौड़ गया।

बड़े खरगोश की अच्छी देखभाल से सिम्बा शेर धीरे धीरे अच्छा हो गया और उसकी ताकत भी वापस आ गयी।

सूँगूरू बड़ा खरगोश भी अब अपने दोनों के लिये छोटे छोटे शिकार पकड़ कर लाने लगा था और उन शिकारों की वजह से बहुत जल्दी ही शेर की गुफा के दरवाजे पर हड्डियों का ढेर भी जमा होने लगा।

एक दिन न्यान्गौ हयीना[8] अपने लिये खाना ढूँढ रहा था कि उसको हड्डियों की खुशबू आयी। वह खुशबू उसको सिम्बा शेर की गुफा तक ले आयी। पर क्योंकि वे हड्डियाँ गुफा के अन्दर से भी देखी जा सकतीं थीं इसलिये वह उन हड्डियों को बिना शेर के देखे नहीं चुरा सकता था।

अपनी जाति के और हयीनाओं की तरह क्योंकि वह हयीना भी एक कायर था इसलिये उसने सोचा कि अगर उसको वह स्वादिष्ट खाना खाना है तो उसको सिम्बा शेर से दोस्ती बनानी चाहिये। सो वह उस गुफा में अन्दर घुसा और खाँसा।

[8] Nyangau Hyena – Hyena is a tiger-like animal. Nyangau is Hyen'sa name in Eastern and Southern African countries. see its picture above.

खॉसने की आवाज को देखने के लिये कि यह आवाज कहॉ से आयी सिम्बा शेर बोला — "कौन शाम को यह भयानक आवाज कर रहा है?"

शेर की बोली सुन कर हयीना के पास जितनी हिम्मत थी वह भी जाती रही फिर भी वह बोला — "यह मैं हूॅ तुम्हारा दोस्त न्यान्गौ हयीना।

मैं तुमसे यह कहने आया हूॅ कि जंगल के जानवर तुमको बहुत याद कर रहे हैं। और हम सब तुम्हारे अच्छे हो कर अपने बीच में जल्दी आने की दुआ मना रहे हैं।"

शेर गुर्राया — "निकल जाओ यहॉ से। तुम झूठ बोल रहे हो क्योंकि अगर तुम मेरे दोस्त होते तो बजाय इन्तजार करने के मेरी तबियत का हाल बहुत पहले ही पूछते। वह सब तो तुमने किया नहीं और अब आये हो मुझे याद करने। चले जाओ यहॉ से।"

हयीना बेचारे ने अपनी पूॅछ अपने पिछले पैरों के बीच में दबायी और भाग लिया वहॉ से। पीछे से वह बड़ा खरगोश खड़ा खड़ा हॅस रहा था।

हयीना वहॉ से चला तो गया पर वह उन हड्डियों के ढेर को नहीं भूल सका जो शेर की गुफा के दरवाजे पर पड़ा था।

हयीना ने सोचा — "मैं फिर वहॉ जाने की कोशिश करूॅगा।" सो कुछ दिन बाद एक दिन जब बड़ा खरगोश शाम का खाना पकाने

के लिये नदी पर पानी लेने गया था तब हयीना ने फिर एक बार शेर के घर आने की सोची।

वह जब शेर के घर आया तो शेर अपनी गुफा के दरवाजे पर ही सो रहा था। न्यान्गौ हयीना धीरे से बोला — "दोस्त, मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम्हारी टॉग का घाव बहुत ही धीरे धीरे भर रहा है क्योंकि तुम्हारा दोस्त सूंगूरू बड़ा खरगोश तुम्हारी देखभाल ठीक से नहीं कर पा रहा है।"

सिम्बा शेर गुर्राया — "क्या मतलब है तुम्हारा? मुझे तो सूंगूरू खरगोश का धन्यवाद देना चाहिये कि मुझे अपनी बीमारी के बुरे दिनों में उस बेचारे की वजह से भूखा नहीं मरना पड़ा। जबकि तुम और तुम्हारे कोई भी साथी तो मुझे देखने तक नहीं आये।"

हयीना उसको विश्वास दिलाता हुआ बोला — "पर जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वह सच है। सारे जंगल में यह बात सभी जानते हैं कि सूंगूरू बड़ा खरगोश तुम्हारा इलाज ठीक से नहीं कर रहा है ताकि तुम्हारा घाव देर से भरे।

क्योंकि जब तुम ठीक हो जाओगे तो वह तुम्हारे घर में जो नौकर की तरह काम कर रहा है वहॉ से निकाल दिया जायेगा। और यह नौकर की जगह तो उसके लिये बड़ी आरामदायक जगह है।

मैं तुमको पहले से बता रहा हूॅ कि सूंगूरू बड़ा खरगोश यह सब तुम्हारे अच्छे के लिये नहीं कर रहा है।"

उसी समय सूंगूरू बड़ा खरगोश नदी से घड़े[9] में पानी भर कर ले आया। उसने अपना घड़ा नीचे रखा और हयीना से बोला — "उस दिन की घटना के बाद तो मुझे तुमको यहॉ शाम को देखने की बिल्कुल ही उम्मीद नहीं थी। इस समय तुमको क्या चाहिये?"

सिम्बा शेर बड़े खरगोश से बोला — "मैं तुम्हारे बारे में न्यान्गौ की कहानियॉ सुन रहा हूँ। वह कह रहा है कि तुम सारे जंगल में बहुत ही होशियार और चालाक डाक्टर हो।

उसने मुझसे यह भी कहा कि जो दवा तुम देते हो वे किसी और के पास नहीं हैं। पर साथ में वह यह भी कह रहा था कि तुम मेरा घाव और पहले ठीक कर सकते थे अगर यह तुम्हारी भलाई में होता तो। क्या यह सच है?"

सूंगूरू खरगोश ने एक पल के लिये सोचा कि यह सब क्या हो रहा है। वह जानता था कि उसको यह मामला बहुत ही सॅभाल कर सुलझाना है क्योंकि उसको पक्का शक था कि यह न्यान्गौ हयीना उसके साथ कोई चाल खेलना चाहता है इसी लिये उसने यह सब सिम्बा शेर से कहा है।

[9] Translated for the word "Gourd". Gourd is dried outer cover of a pumpkin like fruit. See its picture above

सो उसने हिचकिचाते हुए शेर को जवाब दिया — "हॉ और ना। आप तो जानते हैं कि मैं एक बहुत छोटा सा जानवर हूॅ और कभी कभी वे दवाएॅ जिनकी मुझे जरूरत पड़ती है बहुत बड़ी होती हैं और मैं उनको नहीं ला सकता हूॅ जैसा कि सिम्बा शेर जी आपके साथ हुआ है।"

अब शेर को यह जानने की इच्छा हुई कि उसके साथ क्या हुआ है तो वह बैठा हो गया और सूॅगूरू बड़े खरगोश से पूछा — "क्या मतलब? क्या हुआ है मेरे साथ? मुझे साफ साफ बताओ।"

बड़ा खरगोश बोला — "अब यही ले लें। मुझे आपके घाव पर लगाने के लिये हयीना की पीठ की खाल के एक टुकड़े की जरूरत थी ताकि वह जल्दी से भर जाये पर मैं इतना छोटा सा जानवर, मैं भला उसकी खाल कैसे लाता।"

यह सुनते ही इससे पहले कि हयीना वहॉ से भागे शेर न्यान्गौ हयीना पर टूट पड़ा और उसकी पीठ से सिर से ले कर पूॅछ तक एक लम्बी सी पट्टी फाड़ कर अपनी टॉग के घाव पर बॉध ली।

जैसे ही शेर ने हयीना की पीठ से वह पट्टी फाड़ी उसके शरीर के जो बाल खिंच गये थे वे सारे के सारे बाल खड़े ही रह गये। तबसे आज तक न्यान्गौ और दूसरे हयीना के बाल लम्बे खुरदरे और खड़े हुए होते हैं।

इस घटना के बाद तो सूंगूरू बड़ा खरगोश डाक्टर की हैसियत से बहुत ही मशहूर हो गया क्योंकि हयीना की खाल की पट्टी बॉधने के बाद तो सिम्बा शेर की टॉग का घाव बहुत ही जल्दी भर गया था। पर न्यान्गौ हयीना अपना मुँह दूसरे जानवरों के बीच में बहुत दिनों तक नहीं दिखा सका।

2 सौ जानवर[10]

यह लोक कथा पूर्वीय अफ्रीका के केन्या और उसके आसपास के देशों में जहॉ स्वाहिली जाति के लोग रहते हैं कही सुनी जाती है। स्वाहिली जाति के लोग पूर्वी अफ्रीका के कई देशों में रहते हैं – केन्या, तन्ज़निया, मोज़ाम्बीक, यूगान्डा। इसलिये यह कथा किसी एक खास देश की नहीं है बल्कि स्वाहिली जाति के लोगों की है।

एक बार की बात है कि पाटा नाम के गॉव[11] में एक आदमी अपनी पत्नी और अपने एकलौते बेटे के साथ रहता था। उनके पास अपने पहनने के कपड़े और एक टूटी सी झोंपड़ी जिसमें वे रहते थे के अलावा केवल **100** जानवर थे।

अपने बेटे की छोटी ही उम्र में पिता चल बसा। उसके जाने के बाद अब उस बेटे को ही उन जानवरों की देखभाल करनी पड़ती थी। उसकी मॉ घर में रह कर खाना बनाती थी।

पर कुछ साल बाद उस लड़के की मॉ भी चल बसी और अब वह लड़का अपने माता पिता के छोड़े हुए **100** जानवरों के साथ अकेला रह गया।

---

[10] One Hundred Cattle – a folktale from Swahili people, Eastern Africa.
Adapted from the book “African Folktales” by A Ceni. English Edition in 1998.
Swahili people and language span several of Eastern African states – Kenya, Tanzania, Mozambique and Uganda. These people are mostly Muslims.

[11] Pata named village

और एक साल बीत गया तो उसको लगा कि अब उसको शादी कर लेनी चाहिये। वह अपनी जाति में अपने दोस्तों के पास गया और उनको अपने इस फैसले के बारे में बताया। वे सब उसके इस फैसले से बिल्कुल राजी थे कि इस समय उसको एक पत्नी की सख्त जरूरत थी।

उन्होंने कहा — "तुम्हारे लिये इस समय एक पत्नी बहुत ही फायदेमन्द साबित होगी पर तुमको कैसी लड़की चाहिये? तुम किससे शादी करना चाहते हो?"

उस नौजवान ने जवाब दिया — "वह लड़की अपने गॉव से नहीं होनी चाहिये। मुझे एक दूसरे ही तरीके की लड़की चाहिये। क्या कोई उसको चुनने की जिम्मेदारी लेगा?

मैं अभी छोटा हूँ और मेरे जितनी उम्र वाले के लिये यह ठीक नहीं होगा कि वह खुद अपनी शादी के लिये किसी लड़की का हाथ मॉगे। खास करके जब जबकि वह किसी दूसरे गॉव की हो।"

उसके दोस्तों ने इस बात पर भी हामी भरी और उनमें से उसका एक दोस्त इस काम की जिम्मेदारी लेने के लिये तैयार हो गया। उसने कहा कि वह उसका दूत बन कर जायेगा और उसके लिये लड़की देखेगा।

वह वहॉ से चला गया और कुछ समय बाद लौट आया। उसने उस नौजवान से कहा — "मैंने तुम्हारे लिये पड़ोस के गॉव से एक बहुत ही अच्छी लड़की ढूँढ ली है।"

नौजवान दुलहे ने पूछा — "कौन है वह?"

वह आदमी बोला — "वह एक अमीर आदमी अब्दुल्ला की अकेली बेटी है। अब्दुल्ला के पास **6000** जानवर हैं।"

इस खबर को सुन कर तो उस नौजवान को और भी ज़्यादा लगने लगा कि उसको एक पत्नी की जरूरत है। उसने अपने दोस्त से कहा कि वह उस गॉव में जाये ओर शादी की सब बात पक्की कर आये। वह आदमी वहॉ से चला गया।

उसकी बात सुन कर अब्दुल्ला ने कहा — "उस लड़के से कहना कि अपनी बेटी के बदले में मुझे **100** जानवर चाहिये। अगर उसे मेरी बात मंजूर है तो फिर कोई और अड़चन नहीं है।"

आदमी ने आ कर नौजवान को बताया कि उस लड़की के पिता ने क्या कहा था।

नौजवान ने इस बारे में काफी देर तक सोचा और बोला — "अगर मैं उसको अपने **100** जानवर दे देता हूँ तो मेरे पास तो कुछ रह ही नहीं जायेगा क्योंकि मेरे पास तो हैं ही कुल **100** जानवर। फिर मैं और मेरी पत्नी कैसे गुजारा करेंगे?"

आदमी ने कहा — "यह तुम सोच लो और अपना जवाब मुझे बता दो। फिर मैं उसको अब्दुल्ला को बता आऊँगा। मुझे तो अपना काम करना ही है न।"

नौजवान सोचने लगा कि वह इस हालत में क्या करे। वह अपना सिर खुजलाता हुआ इधर से उधर चक्कर काटने लगा।

आखिर उसने फैसला कर लिया और उस आदमी से कहा — "ठीक है जाओ और उससे जा कर कह दो कि मैं तैयार हूँ। मैं उसको 100 जानवर दे दूँगा जो वह अपनी बेटी के लिये माँग रहा है।"

वह आदमी अब्दुल्ला के पास गया और उन दोनों की मुलाकात का इन्तजाम किया गया।

दुलहे ने अपनी होने वाली दुलहिन को देखा। उसको लड़की बहुत सुन्दर लगी सो उसने उसके पिता से शादी की शर्तें तय की। तीन दिन बाद उसने अपने 100 जानवर अब्दुल्ला को दे दिये और एक महीने बाद उन दोनों की शादी हो गयी।

दुलहिन अपने पति के गाँव में उसके घर में रहने के लिये आ गयी। कुछ हफ्तों तक सब कुछ ठीक चला। घर में खाने की कोई कमी नहीं थी। घर में दूसरी चीज़ों की भी कोई कमी नहीं थी।

पर जल्दी ही घर में खाने का सामान खत्म होने लगा तो वह नौजवान अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये, अब हम लोग गरीब हैं। मेरी पूरी सम्पत्ति तो वही मेरे जानवर थे। मैं गायों को दुहता था और बैलों से खेत जोतता था।

मैंने अपने सारे जानवर तुमको पाने के लिये दे दिये ओर अब मेरे पास कुछ नहीं है। अब मेरे पास एक ही रास्ता है कि मैं अपने पड़ोसियों के पास जाऊँ और उनके लिये काम करूँ।

मुझे बहुत नीचे और बहुत थकाने वाले काम करने पड़ेंगे पर उस काम करने से जो कुछ मैं कमाऊँगा उससे हमारे पास कम से कम खाने के लिये तो कुछ होगा।"

पत्नी ने उसके आगे अपना हॉ में सिर झुकाया पर वह बोली कुछ नहीं। अब वह नौजवान हर सुबह अपने पड़ोसियों के घर जाता और थोड़े से दूध, एक थैला अनाज या फिर एक छोटे से मॉस के टुकड़े के बदले में उनकी मजदूरी करता।

कभी वह उनकी गायें दुहता, कभी वह उनकी लकड़ी काटता, कभी वह उनकी छत ठीक करता, तो कभी वह उन स्त्रियों के लिये नदी से पानी ले कर आता जो घर में अकेली खाना बनाने के लिये रह जातीं। पर इन सब कामों के लिये वे सब उसको बहुत कम पैसे देते।

इस बीच गॉव के एक बहुत ही खास आदमी के एक सुन्दर लड़के ने किसी विदेशी लड़की[12] को गॉव में देखा तो उस पर उसका दिल आ गया और वह उससे प्रेम करने लगा।

सो रोज जब उस लड़की का पति काम पर चला जाता तो वह लड़का उसके घर जाता और उसके घर के आस पास घूमता रहता ताकि वह उससे कुछ बात कर सके।

[12] Translated for the word "Foreigner". Here Foreigner does not mean from some other country, but from some other village and from some other tribe.

उस लड़की ने भी उसको यह दिखाया कि जैसे उसमें कुछ गलत नहीं था पर वह इसके बारे में अपने पति से कुछ नहीं कह सकी।

क्योंकि इससे उसको लगा कि इससे उसका पति घर ठहर जाता और जो थोड़ा बहुत काम उसको मिलता था वह भी नहीं मिलता। इससे जो थोड़ी बहुत कमाई होती थी वह भी नहीं होती और उनको खाना भी नसीब नहीं होता।

उस लड़की की शादी हुए करीब करीब छह महीने बीत गये तो अब्दुल्ला ने सोचा कि वह अपनी बेटी और दामाद[13] को देख कर आये कि वे कैसे हैं। सो बिना बताये ही वह उनसे मिलने के लिये चल दिया।

जब वह अपने दामाद के घर पहुँचा तो उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया तो आश्चर्य कि उसकी बेटी दरवाजा खोलने आयी।

जब उसने अपने पिता को दरवाजे पर देखा तो सोचा कि "अच्छा है कि मेरा घर थोड़ा ठीक से रखा हुआ है और मैंने भी अपनी आखिरी अच्छी वाली पोशाक पहनी हुई है वरना मेरे पिता मेरे बारे में जाने क्या सोचते।"

अपनी शरम छिपाते हुए उसने अपने पिता को अन्दर बुलाया और उनको आराम से बिठाया। उसने उनको ताजा फल खाने को

[13] Translated for the "Son-in-Law" – the husband of daughter.

दिये। उसका पिता बोला — "सो मेरी बेटी, तुम कैसी हो? क्या तुम अपने पति के साथ खुश हो?"

उसने कुछ हिचकिचाते हुए कहा — "जी पिता जी।"

पर वह अपना दुख छिपाने पर भी नहीं छिपा सकी सो वह अपने पिता के लिये चाय बनाने के लिये पानी लाने का बहाना करके वहॉ से चली गयी।

वह अपने कमरे में गयी और जा कर फूट फूट कर रोने लगी। "और अब मैं क्या करूँ? घर में खाने के लिये कुछ भी नहीं है पर मुझे कम से कम अपने पिता को खाना तो खिलाना ही है।"

वह इसका कोई हल सोच ही रही थी कि उसने उस नौजवान लड़के को देखा जो काफी दिनों से खिड़की से उससे बात करने की कोशिश में उसके घर के चक्कर काट रहा था।

उसने कुछ सोचा और अपने ऑसू पोंछ लिये। अपने आपको ठीक किया और इस उम्मीद में पीछे वाले दरवाजे से बाहर गयी कि शायद वह उस नौजवान को वहॉ देख सके।

वह उसे वहॉ मिल गया। उसको बाहर देख कर वह बोला — "मेहरबानी करके मेरे इस पागलपन को माफ करना पर जबसे मैंने तुम्हें देखा है न तो मुझे नींद आती है न मुझे भूख लगती है।

मेरे पिता बहुत अमीर हैं। तुम इस भिखारी को छोड़ो और मेरे साथ भाग चलो। मैं तुमको बहुत खुश रखूँगा और तुमको रानी बना कर रखूँगा।"

लड़की ने उससे कुछ प्यार की बातें कीं फिर बोली — "यह मेरी गलती थी कि मैंने एक ऐसे आदमी से शादी की जिसके पास अपने खाने के लिये भी कुछ नहीं था। वह मुझे कहॉ से खिलाता।

अगर तुम मुझसे सच्चा प्यार करते हो तो मुझे यहॉ से ले चलो। मैं इस गरीबी में रहते रहते तंग आ गयी हूॅ। मैंने बहुत दिनों से पेट भर कर खाना भी नहीं खाया है और कोई नया कपड़ा खरीदने की बात तो छोड़ो।"

वह नौजवान तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया "ओह आखिर मैं अपने काम में सफल हो ही गया।" और उस लड़की से बोला — "तो चलो फिर आज ही चलते हैं। और आज ही क्यों अभी क्यों नहीं।"

लड़की बोली — "थोड़ा रुको। आज ही मेरे पिता मुझसे मिलने के लिये आये हैं और मैं उनसे बहुत दिनों से नहीं मिली हूॅ। मुझे अभी उनके लिये अच्छा खाना भी बनाना है।

पर जैसा कि मैंने तुमसे अभी कहा मेरे पास उनके लिये खाना बनाने के लिये कुछ भी नहीं है। तुम ज़रा जा कर खाने के लिये मॉस का एक अच्छा सा टुकड़ा ले आओ ताकि मेरी मेज खाली खाली न लगे। उसके बाद मैं तुम्हारे साथ चली चलूॅगी।"

उस नौजवान ने खुश होते हुए कहा — "ठीक है। मैं तुम्हारे लिये मॉस ले कर अभी आया।"

कुछ मिनटों में ही वह उसके लिये एक चौथाई गाय ले कर आ गया और उससे बोला — "यह लो एक चौथाई गाय और अब अपना वायदा याद रखना।"

लड़की बोली — "तुम चिन्ता मत करो।" और वह गाय के मॉस के उस बड़े टुकड़े को ले कर उसको पकाने के लिये अन्दर चली गयी।

खाना बनाते बनाते शाम के खाने का समय हो गया। उसका पति भी पड़ोसी के लिये कुछ छोटा मोटा काम करके घर वापस आ गया। जब उसने अपने घर में अपने ससुर को देखा तो वह कुछ घबरा गया।

वह उस समय उसको वहॉ देखने की उम्मीद नहीं कर रहा था। पर उसने अपने आपको किसी तरह सॅभाला और यह दिखाते हुए कि सब कुछ ठीक था उसने उनको इज़्ज़त से सलाम किया।

फिर वे दोनों कुछ देर तक बात करते रहे। उसके बाद नौजवान ने उनसे माफी मॉगी और अपनी पत्नी को रसोईघर में देखने चला गया।

उसने आश्चर्य से पूछा — "अरे तुम खाना बना रही हो? पर घर में तो कुछ था ही नहीं।"

लड़की हिचकिचाते हुए बोली — "मुझे कुछ मॉस मिल गया था उसी से खाना बना रही हूॅ।"

"मिल गया था का क्या मतलब है? किसने दिया तुम्हें यह?"

"देखो अब तुम गुस्सा मत हो। मैंने पड़ोसी से कहा कि मेरे पिता यहॉ खाना खाने के लिये आये हैं पर मेरे पास उनको खिलाने के लिये कुछ नहीं है तो उन्होंने मुझे यह मॉस दे दिया।"

नौजवान कुछ नहीं बोला। उसका सिर नीचे झुक गया और उसको बहुत शरम आयी कि अब उसकी यह हालत हो गयी थी कि उसको पड़ोसियों से भीख मॉगनी पड़ी। क्या वह इतना गिर गया था?

उसको इतना दुखी देख कर उसकी पत्नी ने उसको तसल्ली देने की कोशिश की — "देखो तुम खुश रहो, इसमें इतना सोचने की कोई बात नहीं है। हम उन्हें इस मॉस के बदले में कुछ दे देंगे फिर हम उनके ऐहसान के नीचे नहीं दबे रहेंगे।

पर अब तुम जाओ और पिता जी के पास बैठो। खाना अभी तैयार हुआ जाता है। तुम वहॉ बैठो और मैं खाना लगाती हूँ।"

इस बीच यह देख कर कि वह लड़की अभी तक नहीं आयी वह नया नौजवान उसको देखने के लिये सामने के दरवाजे की तरफ गया ताकि वह उसको बाहर आने के लिये इशारा कर सके।

पर जब वह उसके खुले दरवाजे के सामने इधर उधर घूम रहा था तभी उस लड़की के पति ने उसको देख लिया।

उसने उसको पहचान लिया कि वह तो उनके एक पड़ोसी का बेटा था जो उसको कभी कभी काम देता रहता था। सो उसने उसको सलाम किया और उसको खाने के लिये अन्दर बुला लिया।

वह नया नौजवान उसको मना नहीं कर सका और उसके बुलावे पर अन्दर चला गया। जा कर वह दूसरों के साथ मेज पर बैठ गया। सो तीनों – पिता, पति और वह नौजवान मिल कर बात करने लगे जैसे सब कुछ सामान्य हो।

कुछ समय बाद मॉस मेज पर लाया गया और लड़की उन तीनों को वहॉ एक साथ बैठा देख कर बिना किसी आश्चर्य के मुस्कुरायी और बोली — "ओ बेवकूफ लोगों, खाना तैयार है।"

यह सुन कर सबको बड़ी शरम आयी और सबके दिल में गुस्से की एक लहर दौड़ गयी।

अपनी बेटी के शब्दों के बाद उसके पिता ने सबसे पहले खामोशी तोड़ी — "तुमने मुझे बेवकूफ क्यों कहा?"

लड़की बोली — "पिता जी, आप गुस्सा न हों। पहले आप खुशी खुशी खाना खा लें उसके बाद मैं आपको बताऊॅगी कि मैंने आपको बेवकूफ क्यों कहा।"

पर उसका पिता बोला — "नहीं। पहले मैं तुमसे सुन लूॅ कि मैं बेवकूफ क्यों हूॅ तभी मैं खाना खा सकूॅगा। अभी तो तुम्हारी बात सुन कर मेरी भूख ही खत्म हो गयी है।"

इस पर उसकी बेटी निडर हो कर बोली — "पिता जी, आप बेवकूफ इसलिये हैं कि आपने अपनी इतनी कीमती चीज़ एक बहुत ही छोटी सी चीज़ के लिये दे दी।"

उसका पिता बोला — "मैंने? और वह कीमती चीज़ क्या है जो मैंने बहुत छोटी सी चीज़ के लिये दे दी?"

"आपको पता नहीं कि आपकी कीमती चीज़ क्या है? पिता जी मैं अपने बारे में बात कर रही हूँ।"

पिता बोला — "तुम मेरे लिये बहुत कीमती हो यह सच है पर अगर तुम इसको ज़रा और साफ करके कहो ...।"

बेटी बोली — "यह तो साफ है पिता जी। आप जानते हैं कि आपके मेरे अलावा और कोई दूसरा बच्चा नहीं है और फिर भी आपने मुझे केवल **100** जानवरों के बदले में दे दिया हालाँकि आपके अपने पास **6000** से ज़्यादा जानवर हैं। शायद वे **100** जानवर आपके लिये मुझसे ज़्यादा कीमती थे।"

यह सुन कर पिता को बहुत शरम आयी। उसका चेहरा शरम से लाल पड़ गया। वह बोला — "बेटी, तुम ठीक कहती हो। मैं सचमुच में ही एक बेवकूफ हूँ।"

उसके बाद उस लड़की के पति की बारी थी — "और तुमने मुझे बेवकूफ क्यों कहा?"

उसकी पत्नी ने उसकी तरफ देखा और बोली — "तुम तो मेरे पिता से भी ज़्यादा बेवकूफ हो। तुमको तुम्हारे माता पिता से केवल कुछ जानवर विरासत में मिले और तुमने वे सब केवल मुझे पाने के लिये दे दिये।

अगर तुमने कोई लड़की अपने गॉव की ली होती तो शायद उसकी तुम्हें इतनी कीमत न देनी पड़ती। पर तुम तो कोई विदेशी लड़की चाहते थे और इसी लिये तुम इतने गरीब हो गये।

इतना ही नहीं तुमने तो मुझे भी गरीब बना दिया क्योंकि हमारे पास इतना खाना भी नहीं है कि हम रोज पेट भर कर खाना खा सकें। अगर तुमने कुछ जानवर भी अपने पास रख लिये होते तो तुम आज पड़ोसियों के घर में काम नहीं कर रहे होते।"

और पति को यह मानना पड़ा कि उसकी पत्नी ठीक कह रही थी। वह वाकई अपने ससुर से ज़्यादा बेवकूफ था।

वह नौजवान भी जो उसको ले जाना चाहता था जानना चाहता था कि वह बेवकूफ क्यों था।

वह लड़की बोली — "तुम तो मेरे पिता और पति दोनों की बेवकूफियों को मिला कर उनसे भी ज़्यादा बेवकूफ हो। यह मैं यकीन के साथ कह सकती हूँ।"

"इसका क्या मतलब है?"

"तुम तो गाय के मॉस के इस चौथाई टुकड़े के बदले में वह चीज़ लेना चाहते थे जिसको उसके पिता ने **100** जानवर ले कर दी थी और उसके पति ने **100** जानवर दे कर हासिल की थी। क्या तुम मेरे पिता और पति दोनों से ज़्यादा बेवकूफ नहीं हो?"

वह नौजवान भी शरम और डर से लाल पड़ गया। उसने सोचा कि उसके लिये अब यही अच्छा है कि इससे पहले कि बात और

आगे बढ़े और उस लड़की का पति उसको मारे उसको अब यहॉ से चले जाना चाहिये और वह वहॉ से उठ कर चला गया।

उधर लड़की का पिता अपने गॉव चला गया पर वहॉ जा कर उसने तुरन्त ही अपने दामाद के **100** जानवर वापस कर दिये और उसको उसे माफ करने के लिये ऊपर से **200** जानवर और दे दिये।

इस तरह से वे पति पत्नी दोनों अब अमीर हो गये थे और वे खुशी से रहने लगे।

3 नदी की आत्मा[14]

यह लोक कथा पूर्वीय अफ्रीका के केन्या देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

घियासे[15] अपनी जाति का एक बहुत बड़ा लड़ने वाला था इसलिये यह स्वाभाविक था कि अब उसको एक पत्नी की जरूरत थी जो उसके लायक हो।

सो उसने अपने लिये कोई लड़की ढूँढनी शुरू की। काफी ढूँढने के बाद और दर्जनों लड़कियों को मना करने के बाद उसको एक लड़की पसन्द आयी। इसमें कोई शक नहीं कि वह लड़की उस जगह की सबसे सुन्दर लड़की थी। उसका नाम ऐम्मे[16] था और वह नदी के उस पार रहती थी।

घियासे अपना समय बरबाद नहीं करना चाहता था सो उसने उस लड़की के माता पिता से कहा कि वे उसकी शादी उसके साथ जल्दी ही कर दें। उनको भी कोई ऐतराज नहीं था सो घियासे उनसे बात करके शादी का इन्तजाम करने के लिये घर वापस लौट गया।

ऐम्मे का पिता भी अपने जाति का बहुत अमीर और बहुत ताकतवर आदमी था। और क्योंकि वह चाहता था कि उसकी बेटी

---

[14] The Spirit of the River – a folktale from Kikuyu Tribe, Kenya, East Africa.
Adapted from the book "African Folktales" by A Ceni. English Edition in 1998.
The Kikuyu are the largest ethnic group in Kenya. They speak the Bantu language as a mother tongue.

[15] Ghiyase – name of the Kenyan man

[16] Emme – name of the girl

अपने पति के घर में पहली बार ठीक से घुसे इसलिये उसने उसके साथ के लिये एक बहुत सुन्दर दासी का इन्तजाम कर दिया था। उसने अपनी सबसे छोटी बेटी को भी उसकी बड़ी बहिन के साथ जाने के लिये कह दिया था।

सो तीनों लड़कियॉ घियासे के गॉव चल दीं। उनको घियासे के गॉव पहुॅचने के लिये सारा दिन चलना पड़ा इसलिये उनकी शादी की खुशी थकान में बदल गयी। जब तक वे घियासे के घर तक पहुॅचीं तब तक शाम हो आयी थी। शाम का पहला तारा आसमान में निकल आया था।

अपनी थकान मिटाने के लिये और घियासे के घर में ठीक से घुसने के लिये ऐम्मे ने सोचा कि वह नदी में नहा कर तरोताज़ा हो ले तब घियासे के घर जाये।

अब उस नदी में एक आत्मा रहती थी जो उस नदी की अकेली ही मालिक थी। पर ऐम्मे को यह पता नहीं था सो ऐम्मे उस पानी में बिना किसी झिझक के कूद गयी। उसकी बहिन और उसकी दासी तब तक अपने कपड़े ही उतार रही थीं।

ऐम्मे और उसकी बहिन दोनों ही नदी की उस आत्मा से बेखबर थीं। उनको उसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। उधर उस दासी का बाहर से तो व्यवहार बड़ा नम्र था पर उसका दिल बहुत काला था।

वह उस आत्मा के बारे में सब जानती थी पर उसने अपनी मालकिन को जानबूझ कर उसके बारे में नहीं बताया और उसे नदी में नहाने से नहीं रोका।

उल्टे वह नदी के किनारे पर खड़ी रह कर अपनी मालकिन को नदी के बीच में जाने को कहती रही कि वहॉ पानी ज़्यादा साफ था सो वह वहॉ जा कर नहाये।

ऐम्मे भी आगे बढ़ती गयी कि अचानक दो हल्के नीले रंग की बॉहें पानी में से निकलीं और उसे पकड़ कर पानी में अन्दर ले गयीं। उसकी बहिन यह देख कर बहुत डर गयी पर दासी ने उसको धमकाया और बताया कि उसका असली रूप क्या था।

वह बोली — "यह रोना धोना छोड़ो नहीं तो मैं तुमको भी नदी में फेंक दूॅगी। वह आत्मा आ कर तुमको भी इसी तरह से ले जायेगी जैसे वह ऐम्मे को ले कर गयी। आज से तुम मेरी दासी रहोगी और ध्यान रखना अगर तुमने यह सब किसी से भी कहा तो...।

इस तरह से उसने मालकिन की छोटी बहिन को सारा बोझा उठाने पर मजबूर कर दिया और वह छोटी बहिन उस बोझे को अपनी पीठ पर लाद कर उस दासी के साथ ऐम्मे की ससुराल चली। दोनों नदी के उस पार घियासे के गॉव आयीं।

जब घियासे ने दासी को एक छोटी सी लड़की के साथ देखा तो वह बड़ी मुश्किल से अपना आश्चर्य छिपा सका क्योंकि उसको लगा कि यह तो वह लड़की नहीं थी जिसका हाथ उसने मॉगा था।

पर उसने सोचा कि इतनी लम्बी यात्रा की थकान और रात के अँधेरे की वजह से शायद उसकी शक्ल बदली बदली लग रही होगी। सो उसने उन दोनों को घर में बुलाया और उनका इज़्ज़त से स्वागत किया।

अगले दिन घियासे ने अपनी होने वाली पत्नी को अपनी जाति के लोगों से मिलवाया तो वे सब उसको देख कर चकित रह गये। वे सब सोचने लगे कि घियासे तो कह रहा था कि उसकी होने वाली पत्नी बहुत सुन्दर है पर यह तो ऐसी नहीं है। यह तो बहुत ही मामूली सी लड़की है।

पर उन्होंने घियासे से कुछ कहा नहीं क्योंकि वे सब उसको बहुत प्यार करते थे और उसको कोई दुख नहीं पहुँचाना चाहते थे।

दिन बीतते गये और घियासे अन्दर ही अन्दर चिन्तित रहने लगा। वह अपनी शादी की रस्म की तारीख को भी जितना आगे बढ़ा सकता था बढ़ाता रहा। वह कभी एक बहाना बना देता तो कभी दूसरा। पर उसको समझ में नहीं आ रहा था कि वह इस मामले में करे क्या।

दासी इस सबसे बहुत परेशान हो गयी और उसने अपना गुस्सा ऐम्मा की छोटी बहिन पर निकालना शुरू कर दिया। वह उसको डॉटने का कोई भी मौका नहीं छोड़ती थी। कभी कभी तो वह उसको डंडी से भी मारती।

इससे भी ज़्यादा वह उसको उसकी बड़ी बहिन की दुख भरी घटना की भी याद दिलाती रहती।

रोज सुबह वह उस लड़की को बड़े बड़े घड़े ले कर नदी पर पानी भरने भेजती। वह बच्ची भी उस दुख के डर की वजह से जो उसने ऐम्मा का देखा था चुप ही रहती और उस दासी से कुछ नहीं कहती।

घियासे को पता चल गया था कि वह दासी उस छोटी सी बच्ची से किस तरह से बरताव करती थी।

घियासे जब तक घर में रहता तब तक वह पाम के फल की तरह से बहुत मीठी बनी रहती पर जैसे ही घियासे घर से बाहर जाता वह उसके लिये बहुत बुरी बन जाती – वह उससे बुरी तरह से बोलती, उसको धमकियॉ देती, उसको मारती।

घियासे ने एक दिन उसको इस बात के लिये बहुत डॉटा पर उस डॉट का कोई फायदा नहीं हुआ।

एक दिन वह बच्ची रोज की तरह से नदी पर पानी भरने गयी। उसने नदी के पानी में अपना घड़ा डुबोया और उसे बाहर निकाल कर अपने सिर पर रखने ही वाली थी कि वह ऐसा नहीं कर सकी।

वह घड़ा उसकी अपनी बदकिस्मती की तरह बहुत बड़ा और बहुत भारी हो गया था। वह वहीं किनारे पर बैठ गयी और रोने लगी।

अचानक नदी की सतह कुछ हिली और पानी में से एक बहुत ही सुन्दर लड़की निकली। यह ऐम्मे थी जो अब नदी की आत्मा के पानी के महल में एक कैदी की तरह से रह रही थी।

अपनी छोटी बहिन को रोते देख कर उसने अपनी कैद करने वाली नदी की आत्मा से प्रार्थना की थी कि वह उसको कुछ देर के लिये नदी की सतह पर आने दे ताकि वह उसको कुछ तसल्ली दे सके।

आत्मा को अपनी ताकत का पूरा भरोसा था सो उसने उसको नदी की सतह पर जाने की इजाज़त दे दी।

पर जब बच्ची ने ऐम्मे को फिर से देखा तो वह तो बेहोश सी ही हो जाती पर उसकी बहिन के नम्र शब्दों ने उसको यह विश्वास दिला दिया कि वह सपना नहीं देख रही थी वह सच में ही नदी में से बाहर निकल कर आयी थी।

वह अपनी बहिन से लिपट गयी और रो रो कर उसे बताया कि उनकी दासी उसके साथ कैसा बरताव कर रही थी और वहॉ वह अपने आपको कितनी मजबूर महसूस कर रही थी।

सबसे बाद में ऐम्मे ने उसने पूछा — "और मेरा होने वाला पति?"

ऐम्मे की बहिन बोली — "वह तो रोज ही शादी की तारीख़ आगे बढ़ा देते हैं।"

ऐम्मे बोली — "मुझे विश्वास है कि सब कुछ ठीक हो जायेगा, तुम देखना। अब मुझे जाना है क्योंकि अगर मैं अब समय से वापस नहीं गयी तो जब तुम अगली बार यहॉ आओगी तो नदी की आत्मा मुझे तुमसे मिलने नहीं देगी। तुम यहॉ वापस आओगी न?"

"हॉ मैं रोज सुबह यहॉ आऊँगी।"

"ठीक है तो कल सुबह तक। और देखो बहादुरी से काम लेना। घबराना नहीं।" कह कर वह पानी में अन्दर चली गयी।

इस तरह से कुछ दिन बीत गये। वह छोटी बच्ची रोज पानी लेने के लिये नदी पर जाती रही। उसकी बहिन ऐम्मे उससे बात करने लिये रोज नदी की सतह पर आती रही।

वे दोनों कुछ देर के लिये साथ साथ बैठतीं, एक दूसरे को तसल्ली देतीं और फिर अपने अपने रास्ते चली जातीं।

एक दिन जब वह बच्ची पानी पर झुक रही थी और "ऐम्मे ऐम्मे" करके अपनी बहिन को बुला रही थी कि घियासे की जाति का एक शिकारी उधर आ निकला।

"ऐम्मे ऐम्मे" की आवाज सुन कर वह शिकारी एक घनी झाड़ी के पीछे छिप गया और देखने लगा कि वहॉ क्या हो रहा था।

कुछ ही देर में उसने देखा कि नदी का पानी फट गया और उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की किनारे पर आ गयी। उसने बच्ची

को प्यार से गले लगाया और उससे बात करने लगी। कुछ देर बात करके वह लड़की नदी में फिर से वापस चली गयी।

जब वह सुन्दर लड़की नदी में वापस कूद गयी और वह बच्ची अपने पानी के घड़ों के साथ अकेली रह गयी तो वह शिकारी जल्दी से उस घनी झाड़ी के पीछे से निकला और गॉव की तरफ भाग गया। वहॉ घियासे एक जगह बैठा बैठा अपना भाला बना रहा था।

वह खुशी खुशी उसके पास पहुँचा और जल्दी जल्दी बोला — "घियासे घियासे, मैंने अभी अभी कुछ देर पहले तुम्हारी होने वाली पत्नी की दासी को नदी के किनारे देखा।"

घियासे ने उसकी इस बात पर ज़्यादा ध्यान न देते हुए और अपना काम जारी रखते हुए कहा — "तो क्या हुआ। वह तो पानी लाने के लिये रोज ही वहॉ जाती है।"

"पर तुम आगे तो सुनो। मैने उसको "ऐम्मे ऐम्मे" पुकारते हुए सुना।"

यह सुन कर घियासे कुछ परेशान सा हो गया और बीच में ही बात काट कर बोला — "क्या कहा? वह ऐम्मे ऐम्मे पुकार रही थी?"

"हॉ, और फिर एक बहुत सुन्दर लड़की पानी में से निकल कर आयी और उससे बात करने लगी।"

"पर ऐम्मे तो... ।" यह सुन कर घियासे तो कुछ भी न समझ सका।

वह शिकारी फिर बोला — "मुझे मालूम है कि "ऐम्मे" तो उस लड़की का नाम है जिसको तुमने अपनी होने वाली पत्नी के लिये चुना था।

सुनो घियासे, मुझे तो ऐसा लगता है कि नदी की आत्मा ने किसी तरह से तुम्हारी होने वाली पत्नी को पकड़ लिया है और वह उसको पकड़ कर कैदी की तरह से रखे हुए है। और जो लड़की तुम्हारे घर में रह रही है वह कोई दूसरी लड़की है।"

घियासे कुछ सोच कर बोला — "तुम शायद ठीक कह रहे हो। यही बात ठीक हो सकती है क्योंकि जितना ज़्यादा मैं उस लड़की की तरफ देखता हूँ उतना ही ज़्यादा मैं उसको पहचान नहीं पाता।

ऐसा करते हैं कि कल हम दोनों साथ साथ नदी पर चलते हैं और वहाँ चल कर देखते कि हमारा शक ठीक है कि नहीं। यह खबर देने के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद मेरे दोस्त।"

सो अगली सुबह घियासे और वह शिकारी दोनों नदी पर गये और एक घनी झाड़ी के पीछे छिप कर बैठ गये।

कुछ देर बाद वह बच्ची वहाँ पानी भरने आयी तो उसने अपनी बहिन ऐम्मे को पुकारना शुरू किया। कुछ ही मिनटों में ऐम्मे उस पानी में निकल आयी। घियासे ने उसको तुरन्त ही पहचान लिया कि

वही उसकी असली पत्नी थी। उसके मुँह से खुशी की एक चीख निकलते निकलते बची।

जब ऐम्मे पानी में वापस चली गयी तो वे दोनों आदमी भी यह बात करते करते गॉव वापस चले गये कि ऐम्मे को नदी की आत्मा के चंगुल से किस तरह से छुड़ाया जाये।

शिकारी बोला — "मुझे लगता है कि हम लोग इसको अकेले नहीं कर पायेंगे। केवल नदी की बुढ़िया ही तुम्हारी सहायता कर सकती है।"

घियासे खुशी से चिल्लाया — "तुम ठीक कहते हो वही हमारी सहायता कर सकती है। चलो उसी के पास चलते हैं।"

कोई भी यह नहीं जानता था कि नदी की उस बुढ़िया की कितनी उम्र थी। कोई कहता था कि वह **100** साल की थी, कोई कहता था कि वह **200** साल की थी जबकि कुछ का विश्वास था कि वह **1000** साल की थी।

पर हर आदमी जानता था कि वह कहॉ रहती थी। वह नदी के बॉये किनारे पर एक झोंपड़ी में रहती थी। उसकी झोंपड़ी के पास तो हयीना[17] भी आने से डरते थे। वे उसके डर की वजह से वहॉ कभी नहीं आते थे।

[17] Hyena is a tiger-like animal. See its picture above.

घियासे उस नदी की बुढ़िया के पास गया और जा कर उसको अपनी सब बात बतायी तो उस बुढ़िया ने उसको तसल्ली दी कि वह इस मामले में उसकी जरूर सहायता करेगी।

वह एक सफेद बकरा, एक सफेद मुर्गी, एक सफेद शाल और एक टोकरी अंडे इकट्ठे कर ले। जब वह ये सब चीज़ें इकट्ठी कर ले तो वह उनको उसके पास ले आये और तब वह देखेगी कि वह क्या कर सकती है।

घियासे वहॉ से चला गया और उस बुढ़िया की बतायी सारी चीज़ें ले कर लौटा तो बुढ़िया ने कहा कि उसको आने वाली अमावस्या तक इन्तजार करना पड़ेगा। अभी वह गॉव वापस जा सकता था और उस दिन वह सब कुछ देखभाल लेगी।

अमावस्या आयी तो बुढ़िया नदी के दूसरे किनारे पर खुद ही चली गयी। पहले उसने वह सफेद बकरी पानी में धकेल दी और फिर वह सफेद मुर्गी। फिर एक एक करके सारे अंडे उसने पानी में फेंक दिये। उसके बाद उसने शाल नदी के पानी पर बिछा दिया जो उसकी लहरों पर बहता चला गया।

तुरन्त ही पानी फाड़ कर ऐम्मे उस शाल पर बैठ कर ऊपर नदी के किनारे आ गयी।

बुढ़िया बोली — "आओ ऐम्मे। तुम्हारा स्वागत है। तुम डरो नहीं। मैं घियासे की तरफ से आयी हूँ। मेरा विश्वास करो।"

कह कर वह ऐम्मे को अपनी झोंपड़ी में ले गयी। वहॉ पहुँच कर उसने उसके होने वाले पति घियासे को बुलाया तो वह तुरन्त ही अपने शिकारी दोस्त के साथ वहॉ आ पहुँचा।

दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया। कुछ देर बाद यह सब ऐम्मे की छोटी बहिन को भी चुपचाप बता दिया गया तो वह भी उस बुढ़िया की झोंपड़ी में आ गयी।

वहॉ से उस समय जो कोई और भी गुजरा वह यह नहीं बता सका कि वहॉ पर लोग खुशियॉ मना रहे थे या किसी के मरने का दुख मना रहे थे। क्योंकि सभी लोग खुशी के ऑसू भी बहा रहे थे और खुशी से हॅस भी रहे थे।

उसके बाद उन सबने मिल कर एक प्लान बनाया जिसके अनुसार उस छोटी बच्ची को गॉव वापस भेज दिया गया।

जब वह बच्ची घर पहुँची तो उसने उस दासी को बुरा भला कहना शुरू किया — "ओ नीच लड़की, तू घियासे से शादी करना चाहती थी? उॅह। तूने मेरी बहिन को केवल इसलिये मार डाला ताकि तू उसके होने वाले पति से शादी कर सके?"

दासी ज़ोर से चिल्लायी — "चुप रह ओ बेवकूफ। मैं अभी तेरी खबर लेती हूॅ।" कह कर उसने एक डंडी उठायी और उससे उसको वहॉ से भगाने की कोशिश करने लगी।

बच्ची यह कह कर वहॉ से दरवाजे से बाहर निकल कर बुढ़िया की झोंपड़ी की तरफ भाग गयी।

वहॉ ऐम्मे और दूसरे लोग उसका इन्तजार कर रहे थे। उधर वह दासी भी उस बच्ची के पीछे पीछे उस बुढ़िया की झोंपड़ी के अन्दर तक भागी चली गयी।

पर वहॉ तो बच्ची की बजाय ऐम्मे खड़ी थी। दासी को कुछ समझ में नहीं आया कि वहॉ ऐम्मे कहॉ से आ गयी। वह उसको ऐम्मे को भूत समझ कर बहुत डर गयी।

वह वहॉ से बिना सोचे समझे लौट पड़ी और जल्दी ही नदी के किनारे आ पहुॅची। वहॉ आ कर वह अपने आपको रोक न सकी और पानी में सिर के बल गिर पड़ी।

उसी समय हल्के नीले रंग की बॉहें पानी में से निकलीं और उस दासी को घसीट कर अपने महल ले गयीं। वह दासी अभी तक नदी की आत्मा की कैदी है।

कुछ दिन बाद घियासे और एम्मे की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

4 तीन उम्मीदवार[18]

एक बार की बात है कि सोमालिया देश के एक गॉव में तीन लड़के एक ही लड़की से प्यार करते थे। तीनों बराबर के अमीर थे और बराबर की हैसियत के थे सो तीनों ने ही उस लड़की से शादी का प्रस्ताव रखा।

हालॉकि इस बात से उस लड़की के पिता को बहुत खुश होना चाहिये था परन्तु ऐसा नहीं हुआ। उस लड़की के पिता का मन खुशी से भरने की बजाय और दुखी हो गया क्योंकि वह जिस किसी लड़के से भी अपनी बेटी की शादी करता उससे दूसरे दो लड़कों का अपमान होता।

उधर उस लड़की को इस बात से कोई मतलब नहीं था कि उसकी शादी किससे होती है और न ही उसने कभी यही कहा कि वह उनमें से किससे प्यार करती थी या नहीं। इसलिये इस चिन्ता का बोझ भी उसके पिता पर ही था।

उन तीनों लड़कों के पिता रोज आ कर उस लड़की के पिता से कहते कि अब उसको उनके बेटों के बारे में कुछ न कुछ निश्चय

---

[18] Three Suitors – a folktale from Somalia, Eastern Africa
There are a few similar tales in Vikram Vaitaal Stories also, read them at :
(1) Three Princes - http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/vaitaal-1/5-three-princes.htm (2) Three Suitors - http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/vaitaal-1/2-three-suitors.htm (3) Varamaalaa - http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/vaitaal-1/7-varmaalaa.htm

कर लेना चाहिये कि वह उनमें से किसके बेटे से अपनी बेटी की शादी करना चाहता है परन्तु वह उनको रोज ही टाल देता।

उसने अपने देश के बड़े बड़े समझदार लोगों से सलाह ली, कुरान में देखा, परन्तु उसको अपनी समस्या का कहीं कोई हल नहीं मिला। आखिर में उसे एक तरकीब सूझी कि क्यों न वह उन तीनों का इम्तिहान ले कि उनमें से कौन सा लड़का उसकी बेटी के लायक है।

देश के तीन सबसे बड़े और अक्लमन्द लोग इस इम्तिहान के जज बनाये गये। इम्तिहान यह था कि कोई भी लड़का, जो भी उसकी बेटी से शादी करना चाहे, अपनी अपनी होशियारी दिखायेगा और उनमें से जो भी लड़का सबसे ज़्यादा होशियार होगा वह अपनी बेटी की शादी उसी से कर देगा।

पहला लड़का तीनों में सबमें बलवान था सो उसने दो आदमियों को अपने कन्धों पर बिठाया और उन्हें नदी पार ले गया और वापस आ गया। गॉव वाले उसका बल देख कर बहुत प्रभावित हुए।

दूसरा लड़का भाला और राइफल चलाना बहुत अच्छी जानता था। उसने चैट[19] की डंडियॉ जो उसके एक दोस्त के मुॅह में लगी हुई थीं अपने निशाने से उड़ा दीं। एक उड़ती हुई चिड़िया को

[19] Chat – a kind of tree whose leaves are good to suppress hunger. Chewing these leaves are very common in Ethiopia and Somalia countries.

आसमान में ही मार दिया और एक चॉदी के उड़ते हुए सिक्के को भेद दिया।

तीसरा लड़का सबसे सुन्दर था। यह लड़का हार्प[20] बजाता था और गाता था। और ऐसा गाता था कि उसका गाना सुन कर चिड़ियॉ उड़ना भूल जाती थीं और जंगली जानवर अपना चिल्लाना बन्द करके उसका गाना सुनने लग जाते थे।

इस लड़के ने अपना हार्प बजाया और गाया। गॉव की सारी लड़कियॉ आहें भरने लगीं और अपने अपने परदों में से बाहर निकल कर आ गयीं। यह देख कर गॉव के सारे लड़कों को गुस्सा आ गया।

तीसरे लड़के के हार्प बजाने के बाद तीनों अक्लमन्द लोग तय करने के लिये एक काफी की दूकान पर गये कि उनमें से किसको उस लड़की के लिये चुना जाये।

और उनका फैसला क्या था? क्या उनके फैसले ने लड़की के पिता को उसकी समस्या को हल करने में सहायता की?

इन तीनों अक्लमन्दों ने यह फैसला सुनाया — "पहले लड़के ने असाधारण ताकत का प्रदर्शन किया है, दूसरे लड़के ने असाधारण निशानेबाजी दिखायी है और तीसरा लड़का सबसे अच्छा गवैया

[20] Harp is a western string musical instrument. See its picture above.

है।" यद्यपि यह फैसला था तो अक्लमन्दी से भरा हुआ पर इससे लड़की के पिता का तो कोई भला नहीं होता था।

दिन और महीने बीतते गये और वे तीनों लड़के अब इतने अधिक चिन्तित हो गये कि उन्होंने अपने अपने तम्बू उस लड़की के घर के पास बहने वाली नदी के किनारे गाड़ लिये।

रोज उन लड़कों के पिता लड़की के पिता पर फैसला करने के लिये दबाव डालते ताकि उनके बच्चे घर लौट सकें परन्तु लड़की का पिता कोई फैसला ही नहीं कर पा रहा था।

एक दिन वह लड़की नदी पर कपड़े धोने गयी तो तीनों लड़के उसे देख रहे थे। लड़की अचानक कपड़े धोते समय किनारे से फिसल कर नदी में गिर गयी और बहने लगी।

उसी समय एक मगर उसकी तरफ बढ़ा तो हार्प बजाने वाले लड़के ने तुरन्त अपना हार्प उठाया और उसे बजाना शुरू कर दिया। हार्प के संगीत ने मगर पर जादू डाल दिया। उसने लड़की को छोड़ दिया और वह खुशी से नदी में इधर उधर लोटने लगा।

इसी बीच शिकारी ने अपनी राइफल उठा ली और मगर को मार डाला। तीसरा बलवान लड़का नदी में कूद कर लड़की को और ज़्यादा बहने से पहले ही बचा कर किनारे पर ले आया।

तीनों लड़के उस लड़की को ले कर उसके घर गये। लड़की बेहोश थी सो डाक्टर को बुलाया गया और उसे होश में लाया गया।

अब उन तीनों उम्मीदवारों ने आपस में लड़ना शुरू कर दिया। हार्प बजाने वाला लड़का बोला — "मेरी शादी उस लड़की के साथ होनी चाहिये क्योंकि पहले मेरे ही गाने से उस जानवर ने उस लड़की को छोड़ा। अगर ऐसा न होता तो तुम दोनों की कोशिशें बेकार जातीं।"

शिकारी लड़का बोला — "गलत, तुम्हारे संगीत ने मगर को केवल एक मिनट के लिये ही तो रोक दिया था, उसी समय में मैंने उसको मार दिया था।

अगर मैं उसी समय मगर को न मारता तो कुछ पल बाद ही वह उसको खा गया होता इसलिये उसकी शादी मेरे साथ होनी चाहिये।"

बलवान लड़का बोला — "गलत, गलत, तुम दोनों ही गलत हो क्योंकि अगर वह मगर से बच भी गयी थी तो भी वह नदी के बहाव में बह जाती अगर मैं उसको बाहर निकाल कर न लाता इसलिये वह मेरी है।"

जैसा कि हमने कहा था कि सोमाली लोग अपनी कहानियों में पहेलियॉ अधिक पसन्द करते हैं। तो अब यह बताओ बच्चों कि यह लड़की किसको मिलनी चाहिये?

हार्प बजाने वाले लड़के को जिसने लड़की को मगर से छुड़वाया, या शिकारी लड़के को जिसने मगर को मारा और या फिर उस बलवान लड़के को जो उस लड़की को नदी में से बाहर निकाल कर लाया।

अगर तुम सोच सको तो हमको जरूर लिखना।

5 हयीना जिसने एक लड़की से शादी की[21]

एक समय की बात है कि पूर्वीय अफ्रीका के सोमालिया देश में दक्षिण की ओर एक बूढ़ा रहता था। जिस जगह पर वह रहता था वहॉ वह परिवार के साथ अकेला ही रहता था, आस पास में और कोई भी नहीं था क्योंकि वहॉ से दूर दूर तक की जमीन बंजर थी।

उसकी एक पत्नी व दो बेटियॉ थीं जो वहीं उसके साथ ही रहतीं थीं। धीरे धीरे उसकी बेटियॉ बड़ी हुईं। उसकी बड़ी बेटी शादी के लायक हो गयी थी सो उस आदमी को अपनी बेटी के लिये कोई दुलहा ढूँढना था।

यह उसके सामने एक उलझन खड़ी हो गयी क्योंकि वहॉ कोई ऐसा नहीं था जिससे वह अपनी बेटी की शादी कर सके।

उस बूढ़े की पत्नी अपने पति से रोज प्रार्थना करती कि वह भी परिवार सहित किसी ऐसी जगह पर चल कर रहे जहॉ और भी लोग रहते हों पर वह बूढ़ा सुनता ही नहीं था।

एक दिन उसने अपनी पत्नी को साफ साफ बोल दिया — "हमारे पुरखे यहीं रहते चले आ रहे हैं इसलिये मैं यह जगह नहीं छोड़ सकता।"

पत्नी यह सुन कर चुप हो गयी क्योंकि अब उसके पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं था कि वह वहीं रहे।

[21] Hyena Who Married a Girl – a folktale of Somalia, Eastern Africa

उधर दिन पर दिन लड़की बड़ी होती जा रही थी और साथ ही साथ और ज़्यादा सुन्दर भी होती जा रही थी। वह रोज दिन में दस बार अपने पिता से पूछती — "पिता जी, आप मेरी शादी कब करेंगे?"

बूढ़ा पिता अपनी बेटी के इस लगातार सवाल से बड़ा परेशान रहता था पर कर कुछ नहीं सकता था। समय बीतता गया, लड़की बड़ी होती गयी और उसका अपने पिता से यह सवाल पूछना भी जारी रहा।

इसी बीच एक दिन एक अजीब सी घटना घटी। वहॉ कुछ आधे आदमी और आधे हयीना की शक्ल वाले लोग आये और उस जमीन के मालिक के बारे में पूछा।

बूढ़ा आदमी घर से बाहर आया तो क्या देखता है कि कुछ आधे आदमी और आधे हयीना की शक्ल वाले लोग बहुत ही सुन्दर पोशाक पहने खड़े हैं और सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि वे दूसरे देश के होते हुए भी सोमाली भाषा सोमालियों की तरह ही बोल रहे थे।

उस बूढ़े आदमी ने कहा कि वह जमीन उसी की थी। आश्चर्य के साथ वह उन सबको अन्दर ले आया और उनको वही आदर दिया जो मेहमानों को दिया जाता है। उन सबको आराम से बिठाया और फिर उनसे उनके आने की वजह पूछी।

उनमें से जो सबसे बड़ा हयीना था, वह बोला — "हमें पता चला है कि आपके घर में शादी के लायक एक सुन्दर लड़की है। अगर आप राजी हों तो मैं उसके साथ शादी करना चाहता हूँ।"

इस अनोखी बात को सुन कर तो वह बूढ़ा बहुत ही ज़्यादा परेशान हुआ कि वह अपनी इतनी सुन्दर बेटी की शादी उस आधे आदमी और आधे हयीना के साथ कैसे कर दे।

दूसरी तरफ उसे अपनी बेटी के दिन में दस बार पूछा जाने वाला सवाल भी याद आया — "पिता जी, आप मेरी शादी कब करेंगे?"

हयीना ने देखा कि वह बूढ़ा आदमी कुछ पशोपेश में पड़ा है सो उसने कहा — "आप सोच लीजिये हम फिर आ जायेंगे। हमें कोई जल्दी नहीं है।"

उस बूढ़े ने उन सबको पक्के जवाब के लिये अगले दिन आने को कहा और वे सब अगले दिन आने का वायदा करके राजी खुशी घर चले गये।

उन सबको विदा करके उस बूढ़े ने ये सब बातें अपनी पत्नी और बेटी को बतायीं और यह भी बताया कि उसने उनको अभी तक पक्की हॉ या ना नहीं की है। आखिरी जवाब के लिये वे लोग कल आयेंगे।

तो लड़की तो यह सुनते ही बहुत ज़ोर से रो पड़ी और मॉ तो बहुत ही उदास हो गयी।

पिता ने अपनी बेटी को किसी प्रकार समझा बुझा कर चुप किया और समझाया कि वे लोग सब अपनी ही भाषा में बात कर रहे थे और वे आदमी के रूप में ही थे इसलिये उसको कल उससे शादी कर लेनी चाहिये।

लड़की बहुत दुखी थी और वह उस आधे आदमी और आधे हयीना से शादी करने के लिये कतई तैयार नहीं थी। पर अन्त में उसके पिता ने उसको समझा बुझा कर शादी करने पर राजी कर ही लिया।

उसने अपनी बेटी को यह भी तसल्ली दी कि अगर वह आदमी बेकार निकला तो वह उसका उससे तलाक का इन्तजाम भी कर देगा।

उसने उसको यह भी समझाया कि मुसलमान होने की वजह से उन लोगों को और भी आजादी है। वे चार शादियॉ तक कर सकते हैं और यह तो उसकी पहली शादी है अभी तो वह तीन शादियॉ और भी कर सकती थी। सो आखिर वह लड़की मान गयी।

अगले दिन जब वे आधे आदमी और आधे हयीना फिर से उसके घर आये तो बूढ़े ने उनको बताया कि वह अपनी बेटी की शादी उससे करने के लिये राजी है। शादी की सारी रस्में उसी के घर में उसी दिन पूरी की जायेंगी।

यह सुन कर वह हयीना तो बहुत ही खुश हुआ। वह यह सोच कर फूला नहीं समा रहा था कि उसकी शादी एक आदमी की लड़की से हो रही थी।

दहेज आदि तय किया गया और फिर कुछ दिनों तक दोनों तरफ शादी की तैयारियॉ ही चलतीं रहीं। इस बीच उस हयीना को आदमियों वाला खाना खाना पड़ा और वह अपने प्रिय खाने नहीं खा सका।

शादी की रस्में पूरी होने के बाद हयीना के दोस्त अपने अपने घरों को वापस चले गये। हयीना को शादी के बाद अपनी पत्नी के घर में ही रहना था। उन दोनों के लिये उनका घर बहुत ही सुन्दर सजाया गया था। बेटी को भी खूब सजाया गया था।

पत्नी ने जब पति को सजे हुए पलंग पर बैठने को कहा तो पति बोला — "यह पलंग मेरा नहीं है।"

पत्नी यह सुन कर हैरान रह गयी। फिर वह कुछ सोच कर कमरे में रखी एक कुरसी उठा लायी और उसको पलंग के पास रखते हुए बोली — "तो आप यहॉ बैठें।" पर उसका पति वहॉ भी नहीं बैठा।

पत्नी फिर एक चटाई ले आयी और उसको जमीन पर बिछाते हुए बोली — "तो आप यहॉ बैठें।"

लेकिन पति ने फिर वही दोहराया — "यह चटाई मेरी नहीं है।"

यह सुन कर पत्नी को बड़ा गुस्सा आया। वह गुस्से में भर कर पति को मकान के बाहर वाले दरवाजे के पास ले गयी और उसको मकान के बाहर बैठने को कहा।

यह सुन कर पति बहुत खुश हुआ और वह वहीं जा कर बैठ गया। उसने अपनी पत्नी से कहा — "हॉ अब तुम मुझको समझी हो।"

पत्नी बहुत ही अक्लमन्द थी। हालॉकि वह पति की इस बात पर ज़रा भी परेशान नहीं हुई पर फिर भी उसको वह सब अच्छा नहीं लगा।

वह उसको वहॉ बाहर बिठाने के बाद पति के लिये शादी में बने खास स्वाददार खाने ले कर आयी और उसको खाना खाने के लिये कहा तो पति ने फिर पहले की तरह ही कहा — "यह मेरा खाना नहीं है।"

इस बात पर पत्नी को फिर बड़ा गुस्सा आया। वह सोचती थी कि शादी के बाद का जीवन बहुत अच्छा होगा परन्तु यहॉ तो सब कुछ उलटा ही हो रहा था।

फिर उसने सोचा कि हयीना की पसन्द का खाना कौन सा हो सकता है। यह सोचते हुए वह अन्दर गयी, उसने कच्चे मॉस का एक बड़ा टुकड़ा लिया, उसको मिट्टी में लपेटा और राख से भरे बरतन में रख कर उसके सामने रख दिया।

पति वह खाना देख कर बहुत ही खुश हुआ और उसने वह खाना बड़े प्रेम से खाया।

पत्नी को अब पूरा विश्वास हो गया कि उसके पति के अन्दर भाषा के अलावा और कोई भी गुण आदमी का नहीं है। वह ऐसे पति के साथ और अधिक नहीं रह सकती थी और अब उससे पीछा छुड़ाना चाहती थी।

वह तुरन्त ही अपने पिता के पास गयी और बोली — "पिता जी, आपने मेरी शादी एक जंगली हयीना से कर दी है। वह तो बिल्कुल ही जंगली हयीना है।"

ऐसा कह कर उसने अब तक की घटी सब घटनाऐं अपने पिता को बता दीं। यह सब सुन कर घर के सब लोग इस मामले पर विचार करने के लिये इकट्ठा हुए कि लड़की का तलाक कैसे कराया जाये।

उस मीटिंग में वह हयीना भी शामिल था जिससे उस लड़की की शादी हुई थी। बूढ़ा उस मीटिंग का सरदार था।

बूढ़े ने हयीना से पूछा — "मैने अपनी बेटी की शादी तुमसे की है इसलिये मुझे यह जानने का पूरा पूरा हक है कि तुम लोगों के बीच क्या झगड़ा है।"

हयीना बोला — "मैं आदमियों के तौर तरीके अपना कर अपने तौर तरीके नहीं बदल सकता क्योंकि वे हमारे पुरखों ने हमारे लिये

बनाये हैं। और न ही मैं अपना जीवन आदमियों की तरह से जी सकता हूँ।"

बूढ़ा बोला — "तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। और अगर ऐसा है तो अब तुमको दोनों में से एक को चुनना होगा। या तो अपने रीति रिवाजों को और या मेरी बेटी को। बोलो तुम किसको चुनना चाहते हो।"

यह सुन कर हयीना गुस्से में भर गया और वहाँ से उठ खड़ा हुआ और बोला — "आदरणीय ससुर जी, यह मेरे लिये बड़े अपमान की बात होगी अगर मैं अपने पुरखों के बनाये रीति रिवाज छोड़ दूँ इसलिये मैं अपनी पत्नी को छोड़ता हूँ।"

और ऐसा कह कर वह वहाँ से उठ कर जंगल की तरफ भाग गया कि कहीं वे लोग उसे पकड़ कर वापस घर न ले आयें।

यह कहानी हमें जीवन के दो सच बताती है। एक तो यह कि कोई भी जीव अपने वातावरण में ही ठीक रहता है।

दूसरा यह कि कोई भी हो, चाहे वह आदमी हो या जानवर, अपने आपको बहुत ज़्यादा नहीं बदल सकता इसलिये किसी को भी दूसरी तरह के आदमी के साथ सोच समझ कर रहना चाहिये।

6 गधे के कान वाला राजा[22]

यह लोक कथा पूर्वीय अफ्रीका के सोमालिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा के बहुत बड़े कान थे जैसे कि गधे के होते हैं। राजा को अपने कान देख कर बड़ी शरम महसूस होती थी सो जब भी वह बाहर लोगों में होता तो वह अपने कान हमेशा ही ढक कर रखता ताकि गॉव के लोग उसके कानों के बारे में न जान पायें।

केवल एक ही आदमी ऐसा था जिसने राजा के कान देखे थे और वह था उसका नाई। राजा अपने नाई को अक्सर यह चेतावनी देता कि "तुम मुझसे यह वायदा करो कि तुम कभी किसी से यह नहीं कहोगे कि मेरे कान गधे के कान जैसे हैं नहीं तो में अपने दरबान तुम्हारे घर भेज दूँगा जो तुमको ज़िन्दगी भर के लिये जेल में बन्द कर देंगे।"

हालॉकि राजा की चेतावनियों के बाद भी नाई को इस भेद को छिपाना बहुत मुश्किल हो गया था क्योंकि वह राजा के कानों के बारे में सब गॉव वालों को बताना चाहता था पर फिर भी बार बार राजा की चेतावनी उसके दिमाग में घूम जाती इसलिये कई साल तक

[22] A King With Donkey Ears – a tale from Somalia, Africa. Written by Ismael Dahir. Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/383/preview

वह इस भेद को छिपाये रहा। पर एक दिन तो उसकी यह इच्छा हद पार कर गयी।

एक सुबह जब वह नाई सो कर उठा तो उसको लगा कि अब वह यह भेद भेद नहीं रख सकता उसको इसे किसी न किसी से तो कहना तो था ही। सो वह कपड़े पहन कर तैयार हुआ और गॉव के बाहर खेतों की तरफ चल दिया जहॉ वह सोचता था कि वह अकेला ही होगा।

वहॉ उसने घास लगा एक जमीन का टुकड़ा देखा और वहॉ उसे हाथ से खोदना शुरू किया। धीरे धीरे उसने वह गड्ढा काफी गहरा कर लिया।

जब वह अपने काम से सन्तुष्ट हो गया तो वह उस गड्ढे के ऊपर झुका और अपनी सबसे तेज़ आवाज में चिल्लाया "राजा के गधे जैसे कान हैं। राजा के गधे जैसे कान हैं।"

एक बार जब नाई ने राजा का भेद चिल्ला कर बोल दिया तो उसके दिल का बोझ काफी हल्का हो गया। इसके बाद उसने वह गड्ढा उस खोदी हुई मिट्टी और घास से ढक दिया और अपने घर वापस आ गया।

उसको यह विश्वास था कि उसने राजा के विश्वास को नहीं तोड़ा था क्योंकि उसने राजा का भेद किसी नहीं कहा था।

इसके बाद कई साल गुजर गये। कई साल बाद वहॉ उस गड्ढे के पास एक स्कूल बना और उस गड्ढे के चारों तरफ उस स्कूल का खेल का मैदान बना जहॉ उस स्कूल के बच्चे खेलते।

एक दिन जब बच्चे उस खेल के मैदान में खेल रहे थे तो एक छोटे बच्चे ने वहॉ घास और मिट्टी के नीचे एक गड्ढा छिपा देखा। बच्चे ने तुरन्त है वहॉ घास और मिट्टी हटायी तो उस गड्ढे में से एक बहुत ज़ोर की आवाज निकली "राजा के गधे जैसे कान हैं। राजा के गधे जैसे कान हैं।"

उसे सारे बच्चों ने सुना। बच्चे नाई की यह आवाज सुन कर बहुत ही आश्चर्यचकित हो गये और राजा के कानों का यह भेद सुन कर आपस में हॅसने लगे।

उस दिन जब वे स्कूल से घर वापस लौटे तो उन्होंने यह भेद अपने माता पिता से कहा। माता पिता ने यह भेद अपने परिवार के दूसरे सम्बन्धियों से कहा। और फिर उन परिवारों ने दूसरे परिवारों से कहा।

"राजा के गधे जैसे कान हैं। राजा के गधे जैसे कान हैं।" कह कह कर वे आपस में बात करते रहे और हॅसते रहे। बहुत जल्दी ही गॉव भर में यह बात सब लोग जान गये कि राजा के गधे जैसे कान हैं और वे यह सोच सोच कर हॅसते रहे कि राजा सब लोगों के बीच में अपने कान ढक कर क्यों रखता था।

खैर फिर इस बात को राजा को भी जानने में बहुत देर नहीं लगी कि गॉव में सब लोग जान गये थे कि राजा के गधे जैसे कान हैं। इस बात को जान कर राजा को बहुत शरमिन्दगी हुई और बहुत गुस्सा भी आया।

राजा को याद आया कि उसके कानों के बारे में केवल एक ही आदमी जानता था और वह था उसका नाई। बस उसने तुरन्त ही अपने दरबान नाई को पकड़ कर जेल में बन्द कर देने लिये उसके घर भेजे।

दरबान भी तुरन्त ही नाई के घर गये उसको पकड़ कर लाये और ला कर उसको जेल में बन्द कर दिया। अब वहॉ उसको अपनी पूरी ज़िन्दगी जेल में काटनी पड़ेगी।

नाई ने राजा से बहुत प्रार्थना की कि वह उसको छोड़ दे पर राजा ने नाई से कहा — "तुमने मुझसे वायदा किया था कि तुम मेरा यह भेद किसी से नहीं कहोगे पर तुमसे यह भेद छिपाये नहीं छिपाया गया। मैंने तुम्हारे ऊपर विश्वास किया और तुमने मुझे धोखा दिया।

अब अपनी इस गलती के लिये तुम्हें अपनी सारी ज़िन्दगी जेल में काटनी पड़ेगी। तुम इसी तरीके से सीखोगे कि किसी का भेद छिपा कर ही रखना चाहिये न कि लोगों से कहना चाहिये।"

इस तरह से नाई अपनी सारी ज़िन्दगी जेल में रहा और हमेशा ही राजा का भेद खोलने पर अफसोस करता रहा।

7 कृतज्ञ सॉप[23]

पूर्वीय अफ्रीका की यह लोक कथा वहॉ के सूडान देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक आदमी कहीं जा रहा था कि रास्ते में उसको दो सॉप लड़ते हुए मिले। वह उनके पास गया तो उसने देखा कि उनमें से एक सॉप की लड़ते लड़ते बहुत ही बुरी हालत हो गयी थी।

उस आदमी को उस घायल सॉप पर बहुत दया आयी सो उसने एक डंडी उठायी और उन दोनों लड़ते हुए सॉपों को अलग अलग कर दिया।

उसने बड़े वाले सॉप को धमकी दी तो वह वहॉ से बड़ी तेज़ी से भाग गया। फिर उसने दूसरे सॉप को डंडी से छू कर देखा कि वह अभी भी ज़िन्दा था कि नहीं। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह अभी भी ज़िन्दा था।

सॉप बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद आदमी। अगर तुम यहॉ न आते तो अब तक तो मैं मर ही गया होता। तुम्हारे इस उपकार के बदले मैं तुमको एक ताकत देता हूॅ कि तुम सारे जानवरों की भाषा समझ सको कि वे क्या कह रहे हैं।"

आदमी ने पूछा — "क्या तुम सच कह रहे हो?"

---

[23] The Grateful Serpent – a folktale from Nuer Tribe, Sudan, Eastern Africa.
Adapted from the book "African Folktales" by A Ceni. English Edition in 1998.

"हॉ बिल्कुल। तुम वह सब जान जाओगे जो मच्छर, चूहा और गाय आदि जानवर बात करेंगे। पर ध्यान रखना कि यह बात तुम किसी से कहना नहीं नहीं तो तुम मर जाओगे।"

यह भेंट पा कर वह आदमी बहुत खुश हो गया। दोनों ने एक दूसरे को प्यार से विदा कहा और अपने अपने रास्ते चले गये।

उस शाम सोने से पहले उस आदमी ने अपने सारे दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द कर लिये और सोने के लिये बिस्तर पर लेट गया।

कुछ देर बाद एक मच्छर दरवाजे से अन्दर आने की कोशिश करने लगा। जब वहॉ से उसको अन्दर आने का रास्ता नहीं मिला तो वह खिड़की पर गया। पर वहॉ भी उसको अन्दर आने की कोई जगह नहीं मिली तो गुस्से में आ कर वह बहुत ज़ोर से भिनभिनाने लगा।

"सत्यानाश हो इस जगह का। यह घर तो ताबूत[24] की तरह से कस कर बन्द है। अब मैं इसके अन्दर कैसे घुसूँ?"

घर के अन्दर आदमी ने जब मच्छर की यह बात सुनी तो उसको हॅसी आ गयी। उसकी पत्नी ने उसकी तरफ देखते हुए पूछा — "अरे तुम क्यों हॅस रहे हो?"

[24] Translated for the word "Coffin". See its picture above.

अपनी दूसरी हॅसी को रोकते हुए आदमी बोला — "कुछ नहीं कुछ नहीं।" और फिर वे सो गये।

कुछ देर बाद एक चूहे ने उसके घर में घुसने की कोशिश की। उसने भी घर का दरवाजा और खिड़कियॉ देखीं पर उसको भी वे घुसने के लिये नामुमकिन लगीं।

चूहे ने थोड़ी देर तो सोचा फिर वह सीधा छत की तरफ भाग गया। वहॉ उसको तख्तों के बीच में घर में घुसने की एक छोटी सी जगह मिल गयी सो वह वहॉ से घर में घुस गया।

उसने खाने वाली चीज़[25] के लिये उस आदमी के घर के सारे कमरे छान मारे। उसके लिये उसने इधर चीज़ें गिरायीं उधर चीज़ें गिरायीं पर उसको खाने वाली चीज़ कहीं नहीं मिली।

यह देख कर वह गुस्से में चिल्लाया — "हॅुह। सत्यानाश हो इस घर का। यह किस तरह का घर है कि मुझे यहॉ चीज़ का एक ज़रा सा टुकड़ा भी नहीं मिल रहा।"

बिस्तर में लेटे लेटे उस आदमी ने भी यह सुना तो वह फिर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा। उसको हॅसता सुन कर उसकी पत्नी ने फिर पूछा — "अब क्या हुआ? अब क्यों हॅस रहे हो?"

आदमी ने अपने आपको बड़ी मुश्किल से रोकते हुए कहा — "ओह कुछ नहीं, कुछ नहीं। सचमुच में कुछ नहीं।"

[25] Cheese is the prcessed Indian Paneer. It is very commom ingredient of most European and American dishes

रात गुजर गयी और सुबह हो गयी। जैसे वह रोज करता था उसी तरह उस सुबह को भी वह गायों के बाड़े में गया और उनको हरे हरे घास के मैदान में चराने के लिये ले गया।

रास्ते में सब गायें आपस में बात करती जा रही थीं और वह आदमी बड़े आराम से उनकी बातें सुनता हुआ चला जा रहा था। उसके बाद उनके दूध दुहने का समय आया तो उसकी पत्नी बैठने के लिये एक स्टूल और दूध दुहने के लिये एक बालटी ले आयी।

उसको देख कर सबसे बड़ी गाय रँभायी और बोली — "ओ गायों देखो ज़रा, यह स्त्री हमारा दूध चुराने आ गयी।"

यह सुन कर वह आदमी फिर ज़ोर से हँस पड़ा।

इस बार उसकी पत्नी को गुस्सा आ गया — "तुम फिर हँस रहे हो? क्या बात है कल से तुम हँसे ही जा रहे हो।"

"नहीं नहीं कोई खास बात नहीं, बस ज़रा यूँ ही।" पर उसके पास ऐसा कोई बहाना नहीं था जिस पर कोई दूसरा उस पर विश्वास कर लेता।

उसी समय गाय ने फिर से रँभाना शुरू कर दिया — "नहीं नहीं, आज नहीं। आज मैं अपना दूध अपने बछड़े के लिये रखना चाहती हूँ।" और वह उसकी पत्नी से दूर हट गयी।

आदमी ने उसकी बात फिर से समझ ली तो वह फिर हँस पड़ा।

इस बार पत्नी से रहा नहीं गया तो वह बोली — "तुम क्या सोचते हो कि तुम किसका मजाक उड़ा रहे हो?"

उसने फिर से उसको यह कर शान्त किया — "ओह मेरी प्यारी पत्नी, किसी का नहीं, किसी का नहीं। तुम तो यूँ ही बस ज़रा सी बात पर नाराज हो जाती हो...।"

वह बोली — "कल से तुम एक बेवकूफ की तरह से बरताव कर रहे हो।" और अपना स्टूल और बालटी ले कर घर के अन्दर चली गयी।

शाम को वह स्त्री फिर से गायों को दुहने के लिये आयी तो वह बहुत थोड़ा दूध ही दुह पायी सो वह अपने पति से बोली — "देखना ये गायें मुझे दूध ही नहीं दुहने दे रहीं।"

गाय बोली — "क्या तुम यह दूध मेरे बछड़े को पिलाने के लिये ले जा रही हो?"

यह सुन कर तो आदमी हॅसते हॅसते दोहरा ही हो गया।

पत्नी बोली — "यह क्या कोई हॅसने की बात है जो तुम इतनी ज़ोर से हॅस रहे हो? तुम मेरा मजाक बना रहे हो। तुम मेरी बिल्कुल भी परवाह नहीं करते।"

एक बार फिर गाय रॅभायी — "हो सकता है कि उसके पास इसकी कोई वजह हो।"

पति फिर हॅस पड़ा। इस बार तो उससे अपनी हॅसी रोकी ही नहीं गयी।

पत्नी बोली — "अगर तुम्हारा यही ढंग रहेगा तो मैं गॉव के अक्लमन्द लोगों के पास जाती हूॅ और उनसे कहती हूॅ कि वे रात को हमारे घर आयें। तब मैं उनको अपनी समस्या बताऊॅगी और उनसे तलाक की प्रार्थना करूॅगी।

अब पति के पास कहने को कुछ नहीं था। वह फिर से बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा कि शायद हॅस कर वह अपनी पत्नी को शान्त कर सके पर ऐसा नहीं हुआ। वह शान्त नहीं हुई।

शाम को गॉव के बड़े लोग आये और आग के चारों तरफ बैठ कर उस स्त्री से बोले — "तुमने हमें यहॉ क्यों बुलाया है। बताओ तुम्हें क्या परेशानी है।"

"मेरा पति मेरे ऊपर बिना किसी वजह के हॅसता रहता है। हम सोने जाते हैं तभी भी यह हॅसता है। जब यह जानवर चराने ले जाता है तभी भी हॅसता है जब मैं दूध दुहती हूॅ यह तभी भी हॅसता है। मुझे अच्छा नहीं लगता कि इस तरह से कोई मेरा मजाक बनाये।"

बड़े लोगों ने एक दूसरे की तरफ देखा और हॉ में सिर हिलाया कि हॉ यह स्त्री कह तो ठीक रही है। उन्होंने उसके पति से पूछा — "क्यों भाई क्या बात है? हमें बताओ कि तुम अपनी पत्नी पर हर समय क्यों हॅसते रहते हो?"

पति बोला — "नहीं मैं उस पर नहीं हॅसता।"

"तो फिर तुम किस पर हॅसते हो?"

"मुझे यह बताने की इजाज़त नहीं है।"

"तुम हमारा बेवकूफ नहीं बना सकते। यह क्या बात हुई कि मुझे यह बताने की इजाज़त नहीं है। और इसमें न बताने की इजाज़त की क्या बात है। बताओ तुम किस पर हॅसते हो।"

"अगर मैं थोड़े में कहॅू तो मैं जानवरों पर हॅसता हॅू अपनी पत्नी पर नहीं।"

इस पर उन बड़े आदमियों ने फिर एक दूसरे की तरफ देखा और ना में सिर हिलाया। मामला बिल्कुल साफ था कि यह आदमी पागल हो गया था। इसके बाद वे सब वहॉ से एक दूसरे कमरे में चले गये और एक नतीजे पर पहुॅचे।

उसके बाद वे सब वापस लौटे और बोले — "ओ स्त्री, आज से तुम आजाद हो। तुमको आज से इस आदमी से तलाक दिया जाता है क्योंकि तुम्हारा पति पागल हो गया है।"

पत्नी ने यह सुन कर रोना शुरू कर दिया और पति ने उसे फिर से टालमटोल करके समझाना शुरू किया कि यह सब क्या था। पर बड़े लोगों का फैसला किसी तरह से टाला नहीं जा सका। और अब उनका दिमाग भी बदला नहीं जा सकता था।

इस तरह से यह शादी खत्म हो गयी। गॉव के लोगों ने उस दुखी जोड़े से सहानुभूति प्रगट की और पति अपनी पत्नी से बचने के लिये वह गॉव छोड़ कर एक अकेली जगह चला गया।

वह वहॉ कुछ दिन रहता रहा कि उसको वही सॉप फिर से मिल गया जिसको उसने बचाया था।

सॉप बोला — "हलो आदमी, तुमसे फिर से मिल कर बहुत खुशी हुई। पर तुम यहॉ इस जगह क्या कर रहे हो?"

आदमी बोला — "काश तुम जानते कि मेरे साथ क्या हुआ है। मुझे तुम्हारी दी हुई भेंट अपने गॉव वालों को बतानी पड़ी और उन सबने सोचा कि मैं पागल हो गया हूँ।

मेरी पत्नी मुझे छोड़ कर चली गयी, मुझे अपना गॉव भी छोड़ना पड़ा। इस बात को कोई नहीं मान सकता कि तुम मेरे लिये कितनी खुशकिस्मती ले कर आये।"

सॉप बोला — "तुम आदमी लोग भी कितने बेवकूफ होते हो। तुम लोग यह तो देखते नहीं कि क्या सच है। तुम लोगों को तो बस जो कुछ ऊपर से दिखायी देता है तुम लोग उसी को सच समझ लेते हो।

सुनो। जो लोग तुमको पागल कह रहे है वे खुद ही सबसे बड़े पागल हैं। उनके बारे में सोचना छोड़ो। तुम एक ऐसी पत्नी से बच गये जो तुमको समझ ही नहीं सकी। अच्छा हुआ कि तुम अपने बेवकूफ साथियों से भी बच गये।

तुमसे ज़्यादा किस्मत वाला और कौन होगा। खुश रहो और देवता तुम्हारी रक्षा करें।"

आदमी ने सोचा "यह तो ठीक है। यह सॉप ठीक कह रहा है। अब मैं एक आजाद और खुशकिस्मत आदमी हूॅ।"

और खुशी से सीटी बजाते हुए वह आजाद चिड़ियों की बातचीत सुनने के लिये एक मक्का के खेत की तरफ चल दिया।

8 जादुई चिड़े का मीठा गाना[26]

यह लोक कथा पूर्वीय अफ्रीका के तनज़ानिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक दिन एक अजीब सा चिड़ा एक छोटे से गॉव में आया और नीची पहाड़ियों की तलहटी में अपना घोंसला बना कर रहने लगा। तब से वहॉ कुछ भी सुरक्षित नहीं रहा। सब कुछ बदल गया।

गॉव वाले जो कुछ भी अपने खेतों में बोते थे वह सब रात भर में गायब हो जाता था। रोज भेड़ों, बकरियों और मुर्गों की गिनती कम होती जा रही थी।

दिन में भी जब वहॉ लोग खेतों पर काम कर रहे होते थे तो वहॉ बहुत बड़ी बड़ी चिड़ियें आतीं और उनके भंडारघर और अनाजघर तोड़ देतीं और उनमें से उनका जाड़ों के लिये रखा हुआ अनाज चुरा कर ले जातीं।

इस सबसे बेचारे गॉव वाले बहुत परेशान थे। सारे देश में दुख ही दुख था। सारे लोग रो रहे थे और गुस्से के मारे दॉत पीस रहे थे। कोई भी ऐसा नहीं था, कोई सबसे बहादुर आदमी भी नहीं, जो

---

[26] The Enchanted Song of the Magical Bird – a folktale from Tanzania, Eastern Africa.
Adapted from the book: "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Told by Pastor Julius Oelke of the Berlin Mission Church.
{There are some islands in Tanzania – "Zanzibar Islands". They have quite a number of folktales. We have given their folktales separately in "Zanzibar Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta in Hindi languge.]

उस चिड़े को पकड़ सकता क्योंकि वह इन सब लोगों के लिये बहुत तेज़ था।

किसी ने उसको देखा भी नहीं था। बस केवल उसके उड़ने की आवाज सुनी थी जब वह पीली लकड़ी वाले पेड़[27] पर उसके घने पत्तों में बैठने आता था। इस सबसे तंग आ कर उस गॉव के सरदार ने तो अपने सिर के बाल भी नोचने शुरू कर दिये थे।

एक दिन जब उस चिड़े ने अपने हिस्से के जानवर और अनाज ले लिया तो सरदार ने सब लोगों को अपनी अपनी कुल्हाड़ियॉ और बड़े वाले चाकू[28] तेज़ करने के लिये कहा और एक हो कर उस चिड़े के खिलाफ लड़ने के लिये कहा।

उसने उन लोगों से कहा कि उस चिड़े का एक ही इलाज हो सकता था कि वे लोग उस पेड़ को ही काट डालें जिस पर वह बैठता था।

सो सरदार की बात मान कर लोगों ने अपनी अपनी कुल्हाड़ियॉ और बड़े वाले चाकू पैने किये और उस बड़े पेड़ की तरफ उसको काटने के लिये चल दिये।

[27] Translated for the words “Yellowwood tree”

[28] Axes and Matchet – mtachet is a kind of long knife, 1.5 to 2 feet long from African cut the grass. See their pictures above – axe is above and matchet is below.

उनका पहला वार उस पेड़ के तने पर बहुत गहरा पड़ा। इससे पेड़ के ऊपर की पत्तियॉ बहुत ज़ोर से हिल गयीं और उसमें से वह बड़ा चिड़ा निकला।

उस चिड़े के वहॉ से उड़ने के साथ साथ उसके गले से एक बहुत ही मीठा गीत भी निकला जो सब लोगों के दिलों में जा कर बैठ गया।

उस गीत ने उनको दूर की जगहों की बहुत सारी बातें बतायीं जो कभी वापस नहीं आतीं। उसकी आवाज में ऐसा जादू था कि एक के बाद एक उन सारे आदमियों के हाथों से उनकी कुल्हाड़ियॉ और बड़े चाकू नीचे गिर पड़े।

वे अपने घुटनों पर बैठ गये और ऊपर की तरफ उस चिड़े की तरफ इस तरह देखने लगे जैसे उससे कुछ मॉग रहे हों और वह चिड़ा तो बस अपनी पूरी शान से गाये जा रहा था और गाये जा रहा था।

लोगों के हाथ कमजोर पड़ गये थे और उनके दिल भी बहुत प्रेम भरे हो गये थे। वे सोच रहे थे कि इतना सुन्दर चिड़ा उनका इतना सारा नुकसान कैसे कर सकता था।

और जब सूरज पश्चिम में लाल हो कर डूबा तो वे नींद में चलने वालों की तरह से बेहोशी में चल कर गॉव के सरदार के पास वापस आ गये और उससे कहा कि वहॉ तो कुछ भी नहीं था और

जब वहॉ कुछ था ही नहीं तो वह उस चिड़े का क्या बिगाड़ सकते थे।

यह सुन कर सरदार बहुत गुस्सा हुआ। वह बोला — "अब मुझे अपने कबीले के जवानों की सहायता लेनी पड़ेगी। वही इस चिड़े की ताकत को नाकामयाब करेंगे।"

सो अगली सुबह उसके कबीले के जवान अपनी अपनी कुल्हाड़ियॉ और बड़े बड़े चाकू ले कर उस पेड़ की तरफ चल दिये। उनके पहले कुछ वार पेड़ के तने के ऊपर बहुत ज़ोर से पड़े जो उसमें बहुत गहरे घुस गये।

फिर पहले की तरह पेड़ के ऊपर की घनी पत्तियों में से वह रंग बिरंगा चिड़ा निकला और फिर पहले की तरह उसके गले से एक मीठा गीत पहाड़ियों के चारों तरफ गूॅज गया।

उन जवान लोगों ने उसका वह गाना सुना तो वे भी उसमें खो गये। उस गाने में उनको प्यार साहस और बहादुरी के उन कामों को बताया गया था जो उनको करने थे।

उनको भी ऐसा ही लगा कि यह चिड़ा बुरा नहीं हो सकता था। उन जवानों के भी हाथ कमजोर हो गये और उनके हाथों से उनकी कुल्हाड़ी और बड़े चाकू गिर गये। वे भी उस चिड़े के सामने पहले आदमियों की तरह से झुक कर बैठ गये और उस चिड़े के गाने को सुनते रहे।

जब रात हुई तो वे भी नींद से जागे हुओं की तरह से वहॉ से उठे और सरदार के पास पहुँचे। उनके कानों में उस भेदभरे चिड़े का वह मीठा गीत अभी भी गूँज रहा था।

उनके समूह के नेता ने कहा कि यह वाकई नामुमकिन है कि कोई इस चिड़े की जादुई ताकत का सामना कर सके।

उनकी बात सुन कर सरदार फिर बहुत गुस्सा हुआ। वह बोला — "अब तो बस बच्चे ही रह जाते हैं। बच्चे सच सुनते हैं और उनकी ऑखें भी साफ साफ देखती हैं। मैं खुद बच्चों को ले कर वहॉ जाऊँगा और देखता हूँ कि क्या होता है।"

सो अगली सुबह सरदार खुद अपने कबीले के बच्चों को ले कर उस पेड़ के पास गया जहॉ वह चिड़ा रहता था। जैसे ही बच्चों ने पेड़ को कुल्हाड़ी से छुआ, पहले की तरह से पेड़ के ऊपर लगे पत्ते हिले और वह चिड़ा उनमें से बाहर निकला।

वह चिड़ा इतना सुन्दर लग रहा था कि बच्चों की ऑखें चौंधिया गयीं। पर बच्चों ने ऊपर नहीं देखा उनकी ऑखें अपनी कुल्हाड़ियों और बड़े चाकुओं पर ही लगी रहीं। वे अपना गीत गाते जा रहे थे और पेड़ काटते जा रहे थे।

वे अपने गीत की ताल पर उस पेड़ को काटते रहे, काटते रहे और काटते रहे। चिड़े ने अपना गाना शुरू किया। सरदार ने उसके गाने को सुना और मान गया कि उसके गाने का वाकई कोई मुकाबला नहीं था।

यहॉ तक कि उसके अपने हाथ भी कमजोर पड़ने लगे पर बच्चों के कान तो अपने कुल्हाड़ी और बड़े चाकू से लकड़ी के काटने की ही आवाज सुन रहे थे। इसी लिये वे चिड़े का मीठा गाना न सुन कर उस पेड़ को काटते रहे काटते रहे।

आखिर वह पेड़ चरचराया और चरचरा कर नीचे गिर पड़ा और उस पेड़ के साथ गिर पड़ा वह अजीबो गरीब भेदभरा चिड़ा। सरदार ने उस चिड़े को वहॉ से उठा लिया जहॉ वह गिर कर पेड़ों की शाखों के बोझ के नीचे आ कर मर गया था।

सब जगह से लोग खुशियॉ मनाते हुए वहॉ चले आये। बड़े बुड्ढे और मजबूत जवान लोगों को तो विश्वास ही नही हुआ कि छोटे छोटे बच्चे अपने पतले पतले हाथों से यह काम कर देंगे।

उस रात सरदार ने उन बच्चों को इनाम देने के लिये एक दावत का इन्तजाम किया। वह बोला — "तुम ही लोग हो जो सच सुनते हो और साफ देखते हो। तुम ही हमारी जाति की कान और ऑख हो।"

9 फ़सीटो बाजार गया[29]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये पूर्वीय अफ्रीका के यूगान्डा देश की लोक कथाओं से चुनी है।

एक सुबह फ़सीटो[30] बहुत जल्दी उठा, मुर्गे की पहली बॉग पर, सूरज उगने से भी पहले।

आज उसको अपने पिता की साइकिल पर बाजार जाना था क्योंकि उसके पिता को बुखार आ रहा था। आज वह एक बड़े आदमी की तरह केला ले कर साइकिल पर चढ़ता और बाजार जाता, अपना सिर ऊॅचा करके, बड़े आदमियों में आदमी की तरह।

उसने अपनी सोने वाली चटाई मोड़ कर रखी और बाहर झॉका। आसमान केले के पेड़ों के पीछे जहॉ सूरज उगता था वहॉ पीला पीला हो रहा था। ओस अभी भी घास पर पड़ी थी।

वह एक सुन्दर सुबह थी – अपने आपसे बाजार जाने के लिये, जेब में पैसे लाने के लिये और सबके सामने उनको गिनने के लिये, जैसा कि उसका पिता किया करता था।

[29] Fesito Goes to Market – a folktale from Uganda, East Africa.
Adapted from the book: "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Told by Cicely Van Straten
[30] Fesito – a Ugandan male name

जब सैन्ट और शिलिंग[31] के सिक्के उसके हाथ के लकड़ी के कटोरे में पड़ेंगे तब सब कहेंगे — "आहा, इतने सारे पैसे? फ़सीटो तुम तो सचमुच बहुत ही होशियार हो। तुम तो दुनियॉ जानते हो।"

घर के बाहर ठंडी सुबह में उसकी मॉ केला बॉध रही थी। केला बॉध कर उसने फ़सीटो को बुलाया — "फ़सीटो, आ कुछ खा ले।"

फ़सीटो बोला — "नमस्ते मॉ, आज तुम कैसी हो?"

मॉ केला साइकिल की रैक से बॉधते हुए बोली — "मैं ठीक हूॅ बेटा तू कैसा है।"

"मैं ठीक हूॅ मॉ।"

उसकी साइकिल एक पेड़ के सहारे खड़ी थी। फिर उसकी मॉ एक तूम्बा[32] ले आयी और फ़सीटो को उसमें से एक कटोरा दलिया निकाल कर दिया। वह वूले पेड़[33] के नीचे बैठ गया और अपना दलिया खाने लगा।

इस बीच उसकी मॉ ने एक रूमाल में थोड़ी से सिक्के डाले और कई बार उस रूमाल को अलबेटा दे कर उसमें कस कर गॉठ बॉध दी।

---

[31] Cents and Shillings were the currency in Uganda in those times.

[32] Translated for the words "Milk Gourd" also called "White Gourd" or "Bottle Gourd" (laukee in Hindi, Dodhee in Gujaraatee, Saurikai in Tamil) – the dried outer cover of this vegetable. All gourds are used as storage device in Africa to keep dry or wet things there. See its picture above.

[33] Mvule tree – a tall tree abaundantly found in Uganda

फ़सीटो ने पैसे लिये और उनको अपनी गहरी वाली जेब में रख लिया ताकि वे कहीं खोयें नहीं। वह उनको अपनी टॉग से छूता हुआ महसूस कर रहा था। उसने सोचा वह वहॉ पर सुरक्षित थे। फिर उसने अपनी साइकिल उठायी और सड़क पर चल दिया।

उसकी मॉ चिल्लायी — "नमस्ते फ़सीटो।"

"नमस्ते मॉ" फ़सीटो ने जवाब दिया और अपनी साइकिल भगा दी। पर उसकी साइकिल उस समय केले की वजह से बहुत भारी हो रही थी। वह उस समय से ज़्यादा भारी थी जब वह अपने पिता के बाजार से लौटने के बाद शाम को उससे खेला करता था।

केले का भारी बोझ उस साइकिल को इधर से उधर हिला रहा था। पहले इस तरफ फिर उस तरफ और फिर उसकी साइकिल फिसल गयी और लाल जमीन पर गिर पड़ी।

"उफ।" फ़सीटो ने अपनी ज़बान काटी और उसको साइकिल का हैण्डिल पकड़ कर उसको उठाना ही मुश्किल हो गया।

उसने सोचा — "यकीनन मेरे पिता बहुत ज़्यादा ताकतवर होंगे जो वह इतनी आसानी से इस साइकिल पर बाजार जाते होंगे। पर आज मैं अपने पिता जैसा बनूॅगा। मैं किसी को यह कहने का मौका नहीं दूॅगा कि फ़सीटो इस बोझे की वजह से साइकिल से लुढ़क गया।"

वह अपनी साइकिल धकेलता रहा धकेलता रहा जहॉ तक कि सड़क ढलान पर जाती थी। फिर वह उस पर बैठ गया, थोड़ा झुका और पैडल मार कर चल दिया।

ठंडी हवा उसके चेहरे पर लग रही थी और चिड़ियें उसके रास्ते से उड़ी जा रहीं थीं – "कनाक, कनाक।"

फ़सीटो बोलता जा रहा था — "उसको रास्ता दो जो तुमसे ज़्यादा ताकतवर है। फ़सीटो को रास्ता दो जो आज आदमियों में आदमी की तरह से बाजार जा रहा है।"

सूरज अब उसके पीछे था और केले की पत्तियों पर चमकने लगा था। लाल गुड़हल[34] के फूल अपनी पंखुड़ियॉ खोलने लगे थे और दूसरे फूलों की मीठी महक हवा में फैलने लगी थी। बुलबुल ने भी गाना शुरू कर दिया था।

सूरज और ऊपर उठा और घाटी में फैला कोहरा छॅट गया।

जल्दी ही सड़क पर फ़सीटो ने एक बूढ़ा आदमी देखा। वह अपने हाथ में एक टोकरी लिये हुए झुका हुआ चला जा रहा था। वह बूढ़ा मुसोके[35] था।

[34] Red Hibiscus flower. See its picture above

[35] Musoke – a Ugandan name of a male

जैसे ही फ़सीटो उसके पास से निकला तो वह उससे बोला — "नमस्ते।"

"नमस्ते फ़सीटो। तुम्हारे पिता को आज क्या हुआ कि उसने आज तुमको इस तरह हिलते हुए बाजार जाने के लिये अपनी साइकिल दे दी?"

फ़सीटो की मुसोके से बिल्कुल नहीं बनती थी। मुसोके ने कभी तौर तरीके नहीं सीखे थे फिर भी वह बोला — "आज उनको बुखार है इसलिये आज केला ले कर बाजार मैं जा रहा हूँ।"

बूढ़े मुसोके ने दुख प्रगट किया और फ़सीटो की कमर सहलायी। उसने झुर्रियों में से अपनी छोटी काली ऑखों से फ़सीटो की तरफ देखा और बोला — "मेरे बच्चे, मैं बूढ़ा हूँ और मेरी कमर भी अकड़ी हुई है। ई ई ई, बहुत अकड़ी हुई है। क्या तुम मेरे पपीते बाजार ले जा कर मेरा चलना बचा दोगे?"

मुसोके के पास बहुत सारे पपीते थे और उसकी टोकरी बहुत भारी लग रही थी। अगर वह उसके पपीते ले जाता तो उसको उस टोकरी को अपने हैन्डिल से बॉधना पड़ता।

तो सोचो कि फिर साइकिल चलाना कितना मुश्किल पड़ता। पर फिर भी एक बूढ़े आदमी को मना करना अच्छे तौर तरीकों में नहीं आता सो वह बोला — "ठीक है। मैं आपके पपीते ले जाता हूँ।"

बूढ़ा मुसेको बोला — "यह कुछ अच्छे बच्चे वाली बात हुई न। मैं तुम्हारे पिता से कहूँगा कि तुम्हारा बेटा बहुत ही सलीके वाला आदमी है।"

पर जब उसने मुसेको से उसके पपीते लिये तो उसने एक गहरी साँस ली क्योंकि वह जानता था कि यह बूढ़ा मुसेको उसकी इस मेहरबानी को शाम से पहले पहले ही भूल जायेगा और फिर जब वह उससे अगली बार मिलेगा तो वह उससे फिर झगड़ेगा।

उसने पपीते अपनी साइकिल से बाँधे और बूढ़े की तरफ घूम कर देखा। मुसोके तब तक बैठ चुका था और उसने अपना तम्बाकू का थैला निकाल लिया था।

फ़सीटो बोला — "नमस्ते बूढ़े बाबा।"

बूढ़ा मुसोके बोला — "नमस्ते बेटा फ़सीटो।" और वह एक पेड़ की छाया में लेट गया और अपने मिट्टी के पाइप में तम्बाकू भर लिया।

अब तो वह साइकिल और भारी हो गयी थी। अब फ़सीटो जब पैडल मारता था तो उसके पैरों में दर्द होने लगता था। वह बहुत ही नाउम्मीद हो चुका था।

उसको लग रहा था कि वह अपने पिता की साइकिल पर बाजार बड़ी शान से जायेगा पर यह तो बहुत मुश्किल हो गयी। फिर भी मैं आदमियों में एक आदमी हूँ। यही मेरे लिये बहुत कुछ है।

सूरज और ऊपर चढ़ा और सड़क पर बहुत सारे आदमी बाजार जाने के लिये आ गये।

"नमस्ते नालूबाले[36]।" फ़सीटो ने पुकारा।

नालूबाले ने भी जवाब में अपना हाथ हिलाया। वह बहुत सुन्दर थी। पर मुश्किल यह थी कि वह फ़सीटो से बड़ी थी और शादीशुदा भी थी। वह नालूबाले को बहुत चाहता था।

नालूबाले ने कहा — "ठीक से जाना फ़सीटो।"

सड़क के दोनों तरफ बहुत सारी स्त्रियॉ पानी के बरतन लिये जा रही थीं और बच्चे उनके पीछे अपने बड़े बड़े छल्ले[37] और डंडियॉ या फिर मूँगफली की छोटी छोटी टोकरियॉ ले कर भाग रहे थे।

"फ़सीटो, मेरे बच्चे, ज़रा रुकना।"

फ़सीटो रुक गया। वह सोच रहा था कि अब मुझे किसने पुकारा? उसने देखा कि कसीन्गी[38] अपने तीन मुर्गों को साथ लिये भागी चली आ रही थी। वे मुर्गे आपस में टॉगों से बॅधे थे।

"बच्चे, मेहरबानी करके मेरे ये मुर्गे भी ज़रा बाजार ले चलो। इससे मेरा बहुत काम बच जायेगा। और हॉ मेरी चिल्लर ठीक से ले आना – **5** शिलिंग हर एक मुर्गे का दाम। नहीं नहीं, बड़े वाले का

[36] Nalubale – a Ugandan female name
[37] Translated for the word "Hoop"
[38] Kasiingi – a Ugandan female name

7 शिलिंग लगा देना।" और उसने अपने मुर्गे फ़सीटो को पकड़ा दिये।

फ़सीटो ने सोचा — "ये लोग क्या समझते हैं कि मैं क्या कोई खच्चर हूँ जो इतना सारा सामान ले जाऊँ? क्या ये सब लोग मेरे पिता के साथ भी ऐसा कर सकते थे?

फ़सीटो बोला — "कसीन्गी, मैं तुम्हारे ये तीनों मुर्गे इन केलों और पपीतों के साथ कहाँ रखूँगा?" कसीन्गी ने उन बन्डलों की तरफ देखा और फिर अपनी आँखें टेढ़ी करके उसने केलों की तरफ इशारा कर दिया।

"वहाँ बच्चे वहाँ। क्या तुमको दिखायी नहीं देता? तुम्हारे केलों के ऊपर तो 10 मुर्गों की जगह है।"

उसने केले के पत्तों की बनी रस्सी ली और उससे अपने तीनों मुर्गों को केलों के ऊपर बाँध दिया।

साइकिल के ऊपर अब वह ढेर इतना बड़ा हो गया कि फ़सीटो के हाथ उसके ऊपर मुश्किल से पहुँच रहे थे। कसीन्गी फिर बोली — "सँभाल कर जाना। अगर मेरे मुर्गे बाजार तक जाते जाते मर गये तो मैं तुम्हारे पिता से शिकायत कर दूँगी।"

और फ़सीटो यह जानता था कि कसीन्गी ऐसी चीज़ों को उसके पिता से कहना कभी नहीं भूलेगी। उसने एक लम्बी साँस ली और फिर से अपनी साइकिल पर चढ़ गया।

"नमस्ते, और मेरे पैसे मत भूलना।"

"नमस्ते, कसीन्गी। नहीं भूलूँगा।"

अब बहुत गरम हो गया था। पसीना उसके चेहरे पर और उसकी कमीज के नीचे उसकी पीठ पर बहने लगा था। वह हॉफने भी लगा था। उसको चिन्ता थी कि क्या वह बाजार समय पर पहुँच पायेगा?

जितना उसने सोचा था बाजार उससे कहीं ज़्यादा दूर था। हर थोड़ी देर के बाद कोई न कोई उठी हुई जमीन आ जाती और जब उसकी साइकिल उसके ऊपर से गुजरती तो मुर्गे "टाक, टाक" चिल्ला पड़ते।

तभी उसको एक लड़का अपने आगे जाता दिखायी दिया। वह बहुत पतला सा था और बहुत धीरे चल रहा था। वह सीधा भी नहीं चल रहा था। वह किक्यो[39] था। किक्यो तो बहुत बीमार था तो फिर आज यह कहॉ जा रहा है?

वह चिल्लाया — "ए किक्यो, मेरी तरफ देख। मैं केला ले कर बाजार जा रहा हूँ। मेरे पिता को बुखार आया हुआ है। तू कहॉ जा रहा है?"

[39] Kikyo – a Ugandan male name

किक्यो बोला — "मैं अपनी दवा लेने अस्पताल जा रहा हूँ। क्या तुम मुझे अपने साथ साइकिल पर बिठा कर नहीं ले चलोगे फ़सीटो? मेरी टाँगें बहुत थकी हुई हैं।"

फ़सीटो चिल्लाया — "पर तुम बैठोगे कहाँ?"

वह अन्दर ही अन्दर गुस्सा हो रहा था। उसने मन ही मन में कहा "इन सब चीज़ों के साथ ही मुझे बहुत परेशानी हो रही है फिर मैं तुझे कहाँ बिठाऊँगा।

बूढ़े मुसोके ने पहले मुझे अपने पपीते दिये, फिर कसीन्गी ने मुझे अपने मुर्गे दिये। अब मेरे पास किसी बच्चे के लिये जगह नहीं है, किक्यो। मैं क्या कोई सामान लादने वाला खच्चर हूँ जो हर एक को बाजार ले जाऊँ? तू अपने आप जा। नमस्ते।"

और वह किक्यो को वहीं छोड़ कर जल्दी से अपनी साइकिल पर चढ़ कर आगे बढ़ गया।

पर किक्यो का चेहरा उसकी नजरों के सामने से नहीं हटा। किक्यो की आँखें बड़ी बड़ी थीं, चेहरा पतला था और उसके नाक नक्श तीखे थे। उसकी पसलियाँ उसके पेट के ऊपर आगे को निकली हुई थीं। उसके पैरों के जोड़ सूजे हुए थे। उसकी बाँहें और टाँगें बहुत पतली थीं।

क्या उसको किक्यो को अस्पताल नहीं ले जाना चाहिये? आखिर किक्यो ने उससे कितने अच्छे तरीके से पूछा था जबकि उस

बूढ़े मुसोके और किसीन्गी ने इतने अच्छे तरीके से पूछा भी नहीं था।

सो उसने फिर एक लम्बी सॉस ली और रुक गया। फिर वह घूमा और पुकारा — "किक्यो, आजा जल्दी से आजा। जल्दी कर। अगर तू चुपचाप बैठा रहा और गिरा नहीं तो मैं तुझे शहर ले जाऊॅगा। आजा जल्दी कर।"

किक्यो दौड़ा दौड़ा आया और बोला — "धन्यवाद फ़सीटो, धन्यवाद मेरे दोस्त।"

फ़सीटो बोला — "आजा और इस गद्दी पर बैठ जा और हॉ, देख हिलना नहीं। बिल्कुल बिना हिले डुले चुपचाप बैठे रहना। अगर तू हिला तो मेरी साइकिल भी गिर जायेगी और उसके ऊपर रखा सब कुछ गिर जायेगा।" किक्यो तुरन्त ही साइकिल की गद्दी पर चढ़ कर बैठ गया।

वहॉ बैठ कर वह बहुत खुश दिखायी दे रहा था। वह फिर बोला — "धन्यवाद मेरे दोस्त। मैं इस पर चूहे की तरह बिना हिले डुले बैठूॅगा तू फिकर मत कर।"

फ़सीटो ने अपनी साइकिल फिर से चलानी शुरू कर दी। अब वह ढलान पर जा रहा था। उसकी टॉगें और बॉहें दोनों दुख रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे साइकिल हिलना ही न चाहती हो।

गरमी में सड़क भी पानी की तरह हिलती दिखायी दे रही थी। और टिड्डों की चिल्लाहट से उसका सिर फटा जा रहा था। पर बस अब केवल एक पहाड़ी पार करनी और रह गयी थी।

तभी किक्यो बोला — "फ़सीटो मुझे भूख लगी है क्या मैं एक केला खा लूँ?"

फ़सीटो बोला — "नहीं, ये केले बाजार में बेचने के लिये हैं। मेरे पिता क्या कहेंगे जब उनको यह मालूम पड़ेगा कि बच्चों ने उनके केले रास्ते में ही खा लिये।"

किक्यो बोला — "हॉ, यह तो ठीक है।"

पर फिर फ़सीटो ने सोचा कि किक्यो कितना पतला सा है, छोटा सा और भूखा सा। और वह केवल **7** साल का ही तो था। इतनी छोटी सी उमर में उसने काफी सहा था।

सो वह किक्यो से बोला — "तू एक केला ले सकता है। पर देखना केवल एक ही लेना और सँभाल कर लेना कभी केले के पूरे के पूरे ढेर को ही खराब कर दे।"

किक्यो बोला — "धन्यवाद फ़सीटो। उसने एक केला लिया, उसे छीला और खाते हुए बोला — "यह केला तो बहुत अच्छा है फ़सीटो। बहुत बहुत धन्यवाद।"

अब वे उस पहाड़ी पर खड़े थे जहॉ से शहर दिखायी देता था, पीले रंग के फूलों के पेड़ों के बीच में लाल और कत्थई रंग का शहर।

वहॉ बाजार में आम के पेड़ों के नीचे बहुत सारे लोग खड़े थे। कुछ लोग अपनी लम्बी लम्बी पोशाकें पहने खड़े बात कर रहे थे। कुछ लोग बीयर[40] पी रहे थे।

स्त्रियॉ अपनी इन्द्रधनुष के सारे रंगों की लम्बी लम्बी चमकीली पोशाकें पहने दूकानों में बैठी थीं जैसे रंगीन चिड़ियें छाया में आराम कर रही हों।

फ़सीटो बोला बाजार जाना कितना अच्छा है। आदमियों में आदमी लगना कितना अच्छा है। किक्यो ने केले का एक और टुकड़ा काटा और बोला — "तुम सच कह रहे हो फ़सीटो, तुम बहुत ही मजबूत आदमी हो।"

यह सुन कर फ़सीटो की छाती उसके सीने में फूल गयी और वह बिल्कुल सीधा खड़ा हो कर नीचे बाजार की तरफ देखने लगा। तभी उसके पीछे से कोई ज़ोर से हॅसा।

फ़सीटो ने पीछे देखा तो बोसा, काग्वे, वस्वा और मटाबी[41] झाड़ियों में से निकल रहे थे। उसको बोसा बिल्कुल पसन्द नहीं था

[40] Beer is a very light kind of alcoholic drink. It is very common in most African countries.

[41] Bosa, Kagwe, Waswa and Matabi – all are Ugandan male names

और बोसा को भी फ़सीटो बिल्कुल पसन्द नहीं था। सो वह उनसे मुँह फेर कर अपनी साइकिल ले कर ढलान पर चल दिया।

बोसा चिल्लाते हुए फ़सीटो के साथ साथ भागा — "देखो उधर कौन जा रहा है? उधर देखो कौन अपने पिता की इतनी बड़ी साइकिल ले कर हिलता हुआ चला जा रहा है? देखो वह कौन कूड़ा कबाड़ा लिये चला जा रहा है?"

काग्वे, वस्वा और मटाबी भी बोसा के पीछे पीछे और कीग्वे की तरफ इशारा करते हुए और चिल्लाते हुए भागे — "देखो गुब्बारे जैसा केला खाता हुआ कौन बाजार जा रहा है?"

फ़सीटो चिल्लाया — "तुम सब मुझसे जलते हो क्योंकि तुम्हारे पास चढ़ने के लिये साइकिल ही नहीं है।" और ढलान पर तेज़ी से नीचे उतरता चला गया।"

बोसा चिल्लाया — "तुम झूठ बोलते हो, तुम झूठ बोलते हो।"

काग्वे चिल्लाया — "इस तरह से बदतमीजी से बोलने के लिये मैं तुम्हें सबक सिखाऊँगा।"

बोसा आगे भागा और एक पेड़ की डंडी तोड़ ली। वह उसने इस तरह से पकड़ ली कि वह साइकिल के पहियों के तारों में जा कर उलझ जाये और जिस साइकिल पर फ़सीटो और किक्यो बैठे थे वह जमीन पर गिर जाये।

फ़सीटो ने उसको ऐसा करते देख लिया तो अपनी साइकिल को एक तरफ करने की कोशिश की पर बोसा उसके सामने फिर आ गया।

अब फ़सीटो कुछ नहीं कर सकता था। वह देख रहा था कि वह और किक्यो दोनों साइकिल से गिर जायेंगे और केले, पपीते और मुर्गे सब कुचल जायेंगे।

बोसा हॅसा — "हा हा हा, सो तुम सोचते हो कि तुम आदमियों में आदमी हो। जब तुम सड़क पर गिर जाओगे तो बच्चों की तरह से रोओगे।" बोसा अपनी डंडी ले कर फ़सीटो के और पास आ गया।

उसी समय एक आधा खाया केला उसकी ऑखों पर आ कर लगा और फिर उसके बाद किसी ने केले का एक छिलका उसके मुॅह पर बड़ी ज़ोर से फेंका। किक्यो हॅसा और बोसा अपना मुॅह साफ़ करते हुए सड़क के एक तरफ को हो गया।

किक्यो हॅसते हुए ज़ोर से बोला — "भाग फ़सीटो भाग।"

पर मटाबी जो उन सबमें सबसे बड़ा था पीछे से भागा — "ओ बबून, तुम क्या समझते हो कि तुम हमारे साथ बदतमीजी से बरताव कर सकते हो? मैं तुमको दिखाता हूॅ कि मैं शान बघारने वालों के साथ क्या कर सकता हूॅ।"

कह कर वह केले के ढेर को नीचे खींचने के लिये ऊपर को उठा कि अचानक दर्द से चिल्ला कर पीछे की तरफ हट गया —

"औ, अई।" क्योंकि एक मुर्गे ने उसके चेहरे और बॉह पर अपनी चोंच मार दी थी।

फ़सीटो ने सोचा — "अच्छा हुआ मैं कसीन्गी के ये मुर्गे अपने साथ ले आया था।"

पर उनका अभी वस्वा से पाला नहीं पड़ा था। वस्वा ने एक पत्थर उठाया और फ़सीटो पर फेंका। "फटाक"। वह फ़सीटो की पीठ पर जा कर लगा जिससे उसको काफी दर्द हुआ।

वस्वा उसके पीछे चिल्लाते हुए भागा — "ओ छोटे कायर, छोटे कायर लोग तो बजाय सामना करने के बस भाग खड़े होते हैं। छोटा कायर कहीं का।"

वह दूसरा पत्थर उठाने के लिये नीचे झुका कि तभी "बौन्क"। एक सख्त पपीता हवा में उड़ कर आया और उसके कान पर आ कर लगा। वस्वा अपना सिर पकड़े झाड़ियों की तरफ भाग गया।

फ़सीटो ने फिर सोचा — "ओह अच्छा हुआ कि मैंने बूढ़े मुसोके के पपीते लेने से मना नहीं किया।"

किक्यो उसके पीछे से हॅस कर बोला — "तेज़ चलो फ़सीटो और तेज़। अब हमें कोई नहीं पकड़ सकता।"

फ़सीटो ने साइकिल तेज़ चलानी शुरू की। ज़ीईईईई... साइकिल में से आवाज आयी। किक्यो की हॅसी अभी भी उसके कानों में गूॅज रही थी। वे तेज़ और और तेज़ भागते जा रहे थे। अब उनको कोई नहीं पकड़ सकता था।

फ़सीटो बोला — "किक्यो, हालॉकि तुम बहुत छोटे हो फिर भी तुम बहुत ही होशियार बच्चे हो। बहुत अच्छे। अगर तुमने यह केले का छिलका और पपीते उनकी तरफ इतनी तेज़ी से नहीं फेंके होते तो हम लोग तो कहीं सड़क पर पड़े होते और वे चोर हमारी चीज़ें चोरी करके ले गये होते।"

उसने अपने मन में सोचा कि अच्छा हुआ कि वह किक्यो के ऊपर मेहरबान हो गया था और उसको अपने साथ बिठा लाया।

अब तो वे दोनों सड़क पर उड़ते हुए से भागे चले जा रहे थे। पेड़ और मकान सब पीछे छूटे जा रहे थे। अचानक वे बाजार में आ गये। आदमी और मुर्गे और कुत्ते सभी उनके सामने से हट गये।

"ए फ़सीटो, क्या कोई बुरी चीज़ तुम्हारा पीछा कर रही है जो तुम इतनी तेजी से भागे चले जा रहे हो? मेरी मूँगफलियों का ख्याल रखना। मेरे अंडों का ख्याल रखना। मेरे पपीतों का ख्याल रखना।"

उसकी बुआ ने अपनी दूकान से पुकारा — "फ़सीटो, मेरे भतीजे। क्या ऐसे बाजार आते हैं जैसे मैदान में तूफान?"

पर उसकी बुआ मुस्कुरा रही थी और वह फ़सीटो, पीछे की सीट पर बैठे किक्यो के साथ बाजार में अपना सिर ऊँचा किये चला जा रहा था।

फ़सीटो हॅसा और साथ में किक्यो भी। उसकी कमर गर्व से सीधी हो गयी। वह अपने पिता के केले तो बेचने के लिये लाया ही था, मुसोके के पपीते और कसीन्गी के मुर्गे भी बिना किसी नुकसान के ले आया था।

आज वह आदमियों में एक आदमी की तरह साइकिल पर चढ कर आया था।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html
7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html

8 इटली की लोक कथाऐं**–3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं**–4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं**–5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं**–6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं**–7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
12 इटली की लोक कथाऐं**–8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
13 इटली की लोक कथाऐं**–9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
14 इटली की लोक कथाऐं**–10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
15 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
16 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**